www.icrw.org/asia

ICRW
INTERNATIONAL CENTER FOR RESEARCH ON WOMEN
PASSION. PROOF. POWER.

प्लान-इट गर्ल्स

किशोरियों के सशक्तिकरण और रोज़गार क्षमता हेतु कार्यक्रम का बहुस्तरीय दृष्टिकोण

प्लान-इट गर्ल्स
किशोरियों के सशक्तिकरण और रोज़गार क्षमता हेतु कार्यक्रम का बहुस्तरीय दृष्टिकोण

ICRW के बारे में

इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वीमेन (ICRW) एक वैश्विक शोध संस्थान है, जिसके क्षेत्रीय केंद्र वाशिंगटन डी.सी., संयुक्त राज्य अमेरिका; नई दिल्ली, भारत; कंपाला, युगांडा; और नैरोबी, केन्या में हैं। 1976 में स्थापित, **ICRW** दुनिया भर में महिलाओं और लड़कियों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को आगे बढ़ाने के लिए व्यावहारिक, कार्यवाही योग्य समाधानों की पहचान करने के लिए शोध करता है।

ICRW एशिया के कार्यक्षेत्र में मुख्य रूप से शिक्षा और आजीविका तक पहुंच, किशोरियों के सशक्तिकरण, जेंडर आधारित हिंसा, मर्दानगी, जेंडर असमानता, HIV की रोकथाम और महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा शामिल हैं।

अधिक जानकारी के लिए कृपया **www-icrw-org/asia** देखें

प्रस्तावित उद्धरण

कुमार, पी., व्यास, ए., नारायणन, आर., नायक, जे., पात्रा, डी.एस. और अच्युत, पी. (2021)। प्लान–इट गर्ल्सः किशोरियों के सशक्तिकरण और रोज़गार के लिए एक बहुस्तरीय प्रोग्रामिंग दृष्टिकोण। नई दिल्लीः इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वीमेन।

कवर फोटोः प्लान–इट गर्ल्स द्वारा आयोजित आपसी मेलजोल सत्र में किशोरियां
फोटोः केतकी नागराजू, आईसीआरडब्ल्यू एशिया

प्रकाशन अधिकार

इस प्रकाशन में प्रलेखित शिक्षाओं, प्रक्रियाओं और अच्छी प्रथाओं को प्लान–इट गर्ल्स के अंतर्गत ICRW एशिया द्वारा रेस्टलेस डेवलपमेंट और प्रवाह के साथ साझेदारी में एकत्रित किया गया था। कार्यक्रम को बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन द्वारा समर्थित किया गया था। इस रिपोर्ट में तथ्यों और सूचनाओं को केवल गैर–व्यावसायिक उपयोग के लिए और उपयुक्त विशेषता के साथ पुनः प्रस्तुत/उल्लेख/उद्धृत किया जा सकता है।

अभिस्वीकृतियाँ

यह आलेख धरातल पर सामूहिक प्रयास से क्रियान्वित की गयी प्रक्रियाएं, सीख और अच्छी प्रथाओं का परिणाम है जिसकी एकाधिक बार प्रतिपुष्टि की गयी। हम सभी किशोर लड़कियों, लड़कों, माता–पिता, शिक्षकों, स्कूलों के प्रमुख, समुदाय के सदस्यों और नेतृत्वकर्ताओं को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम के फंडिंग और समर्थन के लिए बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन (BMGF) के प्रति हमारी हार्दिक कृतज्ञता है।

हम अपने ICRW एशिया सहयोगियों, डॉ. रवि वर्मा, प्रणिता अच्युत और अमजीत मुखर्जी को उनके अमूल्य सुझावों और अंतर्दृष्टि के लिए धन्यवाद देते हैं। हम डॉ. प्रिया नंदा को भी धन्यवाद देते हैं जो उस वक्त ICRW के साथ थीं और उन्होंने महत्वपूर्ण प्रारंभिक चरण में परियोजना की संकल्पना की और काम को दिशा दी। साथ ही, ICRW झारखंड कार्यालय के सहयोगियों, नसरीन जमाल और तन्वी झा – को राज्य सरकार के साथ समन्वय स्थापित करने और कार्यक्रम का समर्थन करने में उनके योगदान के लिए धन्यवाद।

हम BMGF में अपने कार्यक्रम अधिकारियों, डॉ दिवा धर, डॉ यामिनी आत्मविलास और सुश्री शुभा जयराम को कार्यक्रम के विभिन्न चरणों में उनके बहुमूल्य दिशानिर्देश और प्रतिक्रिया के लिए धन्यवाद देते हैं।

हम प्लान–इट गर्ल्स यूथ फैसिलिटेटर्स और हमारे साथी संगठनों, रेस्टलेस डेवलपमेंट और प्रवाह टीम के सदस्यों के प्रयासों के लिए आभार प्रकट करते हैं।

हम कार्यक्रम समन्वय और संचालन में मदद के लिए संदीपा फ़ांडा और संपादकीय समीक्षा के लिए ऐड कॉऑथर्स से आनंदिनी क्षीरसागर का धन्यवाद करते हैं। संचार और प्रकाशनों में सहायता के लिए हम केतकी नागराजू और आकृति जयंत को भी धन्यवाद देते हैं।

डॉ एमी ग्रेगोल्स्की और प्रभलीन टुटेजा, जिन्होंने प्लान–इट गर्ल्स के कार्यान्वयन कार्यनीति में योगदान दिया, उनके भी हम आभारी हैं। हम अपने सभी सहयोगियों के योगदान के लिए आभारी हैं जिन्होंने प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम के विकास, रुपरेखा तैयार करने, कार्यान्वयन और मूल्यांकन में हमारा समर्थन किया है।

विषय–सूची

कार्यकारी सारांश	2
सन्दर्भ	4
युवा सहायक (यूथ फैसिलिटेटर्स)	7
किशोरियों और किशोरों के साथ स्कूल आधारित पाठ्यक्रम को लागू करना	13
झारखंड में शिक्षकों का प्रशिक्षण	24
युवा संसाधन केंद्र	27
सामुदायिक जुड़ाव	29
प्लान–इट गर्ल्स की निरंतरता और बड़े पैमाने पर कार्यक्रम का कार्यान्वयन	34
अनुलग्नक	38

संक्षिप्त रूप और परिवर्णी शब्द

ASHA: मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता
DEO: जिला शिक्षा अधिकारी
DoE: शिक्षा निदेशालय
EVGCB: शैक्षिक, व्यावसायिक, मार्गदर्शन और परामर्श ब्यूरो
FP2020: परिवार नियोजन 2020
GBSSS: सरकारी बालक सीनियर सेकेंडरी स्कूल
GEMS: जेम्स – स्कूलों में जेंडर समानता आंदोलन
GGSSS: सरकारी बालिका सीनियर सेकेंडरी स्कूल
GNCT: राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की सरकार
HOSs: स्कूलों के प्रमुख
IGS: भारतीय ग्रामीण सेवाएं
ITI: औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान
KGBV: कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय
NGO: गैर–सरकारी संगठन
NSDC: राष्ट्रीय कौशल विकास निगम
ODI: विदेशी विकास संस्थान
OECD: आर्थिक सहयोग और विकास संगठन
P.A.C.E.: पेस – व्यक्तिगत उन्नति और करियर संवर्धन कार्यक्रम
PAGE: लड़कियों के सशक्तिकरण और रोज़गार के लिए आगे की योजना बनाने के लिए कार्यक्रम
PEs: कार्यक्रम के कार्यकारी
PRADAN: विकास कार्य के लिए व्यावसायिक सहायता
PRIs: पंचायत राज संस्थाएं
RD: रेस्टलेस डेवलपमेंट
SDGs: सतत विकास लक्ष्य
SHGs: स्वयं सहायता समूह
SMCs: स्कूल प्रबंधन समितियां
YFs: युथ फसिलिटेटर्स
YRC: युवा संसाधन केंद्र
WGCD: महिलाएं और लड़कियां विकास के केंद्र में

कार्यकारी सारांश

प्लान–इट गर्ल्स: किशोरियों के लिए सशक्तिकरण और रोज़गार क्षमता

प्लान–इट गर्ल्स किशोरियों के लिए साधन बनाने और उनकी आकांक्षाओं का समर्थन करने के लिए जेंडर समानता को बढ़ावा देने के लिए एक बहु–स्तरीय और बहु–हितधारक कार्यक्रम है। कार्यक्रम की रूपरेखा में लड़कियों को केंद्र में रखा गया है तथा उनके सामाजिक वातावरण के मुख्य हितधारक– उनके किशोर–साथी, परिवारों, स्कूलों और समुदाय के सदस्य भी शामिल हैं। दो साल की अवधि में, कक्षा 9 और 11 में लड़कियों को एक जेंडर परिप्रेक्ष्य से युक्त जीवन कौशल और रोज़गार कौशल के लिए तैयार किया जाता है ताकि उन्हें स्कूल के बाद काम मिलने में मदद मिल सके। कार्यक्रम में किशोर साथियों, माता–पिता, शिक्षकों और समुदाय के सदस्यों जैसे हितधारकों के साथ भी गतिविधियां की गयीं जिससे कि किशोरियों को अपनी क्षमता को पूर्णतः हासिल करने के लिए एक सक्षम वातावरण मिले। यह कार्यक्रम दिल्ली के 10 माध्यमिक विद्यालयों और झारखंड के दो जिलों–देवघर और पाकुड़ के 10 स्कूलों में लागू किया गया था।

प्रक्रिया के आलेख की व्यापकता

प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम की अवधारणा एक एकीकृत मॉडल के रूप में की गई थी, जहाँ लड़कियों और उनके किशोर साथियों के साथ कक्षा में गतिविधियां की गयीं और साथ ही एक सक्षम वातावरण बनाने के लिए अन्य सभी महत्वपूर्ण हितधारकों को जोड़ा गया। जबकि सभी कार्यनीति समान रहीं परंतु प्रासंगिक और भौगोलिक अंतरों के कारण, दिल्ली और झारखंड में की गई गतिविधियों में भिन्नता थी। प्रलेखन की यह प्रक्रिया कार्यक्रम द्वारा उपयोग की गयी कार्यनीतियों कार्यनीति और संबंधित गतिविधियों का विवरण देता है। यह आलेख किशोरियों के साथ काम करने वाले कार्यकर्ताओं व्यावसायिक को पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण का उपयोग करके कार्यक्रम की रुपरेखा तैयार करने और क्रियान्वित करने में सहायक होगा। यह आलेख प्रत्येक कार्यनीति के मूल कारण और विस्तृत प्रक्रिया का विवरण प्रस्तुत करता है। यह प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम की चुनौतियों और उनसे निपटने की कार्यनीतियों और सीखों पर भी प्रकाश डालता है।

कार्यक्रम के प्रमुख घटकों हेतु अनुशंसा

प्लान–इट गर्ल्स जैसे बहु–स्तरीय और बहु–हितधारक कार्यक्रम में, कार्यक्रम के प्रत्येक हितधारक के लिए निश्चित कार्यनीतियाँ और स्पष्ट गतिविधियाँ होना आवश्यक है। प्रमुख कार्यक्रम घटकों में से प्रत्येक के लिए, उच्च–स्तरीय अनुशंसाएँ नीचे दिए हैं:

युवा सहायक (यूथ फैसिलिटेटर्स): 18–28 वर्ष के आयु वर्ग के युवक और युवतियां जिन्होंने स्कूलों और समुदायों में कार्यक्रम संचालन में सहायता की। युवा सहायक (YFs) किशोरों के समान समुदायों और सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से थे और स्कूलों में पाठ्यक्रम संचालन और कार्यक्रम के सामुदायिक भागीदारी को लागू करने के लिए जिम्मेदार थे।

- उच्च गुणवत्ता की अवधारणा, सामग्री और सॉफ्ट–स्किल प्रशिक्षण को बढ़ावा देना;
- लगातार सहयोग और समर्थन प्रदान करना;
- एक दूसरे से सीखने (क्रॉस–लर्निंग) को बढ़ावा देना और अन्य अवसरों को उपलब्ध कराना;
- युवा सहायकों के काम छोड़ के जाने की स्थिति की परिकल्पना करते हुए पहले से वैकल्पिक व्यवस्था की कार्यनीति बनाना

लड़कियों और लड़कों के साथ स्कूल–आधारित पाठ्यक्रम का क्रियान्वन: इसके तहत लड़कियों और लड़कों के साथ पाठ्यक्रम का संचालन शामिल है– जिसमें लड़कियों के साथ करियर पेस (पेस) पाठ्यक्रम और जेम्स (जेम्स) पाठ्यक्रम – सहित कार्यक्रम के समापन पर एक करियर मेला सम्मिलित है।

- स्कूल में पाठ्यक्रम का संचालन यथाशीघ्र शुरू करना;
- प्रधानाचार्यों (HOSs) के साथ एक सुसंगत तालमेल हेतु कार्यनीति का विकास और कार्यान्वयन;
- स्कूलों में YFs को कार्यक्रम के चेहरे के रूप में स्थापित करना;
- लचीलेपन और पुनःसमायोजन की अनुमति संग स्कूल कार्यान्वयन की योजना बनाना;
- औद्योगिक भागीदारी को जल्दी शुरू करना।

झारखंड में शिक्षकों की भागीदारीः शिक्षकों का जेंडर उन्मुखीकरण विकसित करने और किशोरों को सम्मिलित करने की आवश्यकता पर शिक्षकों के दृष्टिकोण का निर्माण करना।

- शिक्षकों की जरूरतों को पूरा करने और कार्यक्रम के उद्देश्यों के साथ तालमेल स्थापित करने के लिए सही कार्यनीति तैयार करना;
- नियमित बैठकों और कार्यशालाओं में भागीदारी के माध्यम से निरंतर बातचीत और सहभागिता सुनिश्चित करना।

युवा संसाधन केंद्रः सभी हितधारकों के लिए उचित जगह जो सामुदायिक संसाधन के रूप में कार्य करते हैं।

- युवा संसाधन केंद्रों (YRCs) को योग्य स्थानों के रूप में विकसित करना जो कार्यक्रम हितधारकों के लिए संसाधन और गतिविधि केंद्र के रूप में कार्य कर सकते हैं।

सामुदायिक जुड़ावः दिल्ली में किशोरों के मुद्दों पर माताओं की बैठकें और सामुदायिक अभियान और झारखंड में पंचायती राज संस्थान (PRI) के सदस्यों को संवेदनशील बनाना।

- स्थानीय भौगोलिक और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ के अनुरूप ढांचा और बहुस्तरीय दृष्टिकोण अपनाना।

प्लान–इट गर्ल्स की निरंतरता और बड़े पैमाने पर कार्यक्रम का कार्यान्वयनः परियोजना की समय सीमा के बाद कार्यक्रम के प्रभाव को बनाए रखने के लिए गतिविधियों और जानकारी उत्पादों की योजना बनाई गई थी। इसमें शिक्षा जारी रखने के लिए लड़कियों को समर्थन देना और उन्हें प्रशिक्षण और रोज़गार के अवसरों से जोड़ना, छात्रों और शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में रोज़गार क्षमता योग्यता डॉकेट विकसित करना और जेंडर–उत्तरदायी कक्षा तैयार करने हेतु शिक्षकों के लिए एक संदर्भ मार्गदर्शिका शामिल है। इसके अलावा, कार्यक्रम का विस्तार करते समय निम्नलिखित अनुशंसाओं पर विचार किया जाना चाहिएः

- जेंडर–परिवर्तनकारी कार्यक्रम की संरचना;
- जेंडर–एकीकृत पाठ्यक्रम;
- स्कूल के बहार भी किशोरियों को सहयोग देना;
- कार्यक्रम को स्कूल प्रणाली में एकीकृत करना;
- घर और समुदाय के भीतर सहयोगी बनाना;
- संस्थागत हितधारकों के बीच भागीदारी को और ज़िम्मेदारी लेने को बढ़ावा देना;
- कार्यक्रम टीम में निवेश करना।

झारखंड में प्लान–इट गर्ल्स के सामुदायिक अभियान आयोजन में अपनी उपस्थिति की तैयारी में किशोरियां (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

सन्दर्भ

महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी (LFP) को प्रेरक शक्ति और आर्थिक विकास के परिणाम दोनों के रूप में मान्यता दी गई है। इसके स्थायी सकारात्मक प्रभाव स्थानीय और राष्ट्रीय आर्थिक संकेतकों तथा महिलाओं और उनके परिवारों पर देखे गए हैं। (वेरिक, 2014)।[1] फिर भी महिलाएं अक्सर अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में अकुशल नौकरियों में काम करती हैं जहाँ उन्हें कम वेतन दिया जाता है, लाभ और तरक्की के अवसरों की कमी होती है। भारत में महिला श्रम बल की भागीदारी की घटती दर को असमान जेंडर मानदंडों, शिक्षा तक सीमित पहुंच, कौशल के अवसरों की कमी और श्रम बाजार में लाभकारी प्रवेश के लिए संपर्कों की कमी को जिम्मेदार ठहराया गया है। स्कूल नामांकन दरों में सुधार के बावजूद, लड़कियां आर्थिक भागीदारी से दूर छूट जाती है, जो सशक्तिकरण और जेंडर समानता लाने के लिए बहुत ज़रूरी है। किशोरावस्था के दौरान हस्तक्षेप करना और यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि लड़कियों की शिक्षा और कौशल तक पहुंच हो, जो अच्छे रोज़गार प्राप्त करने और बनाए रखने के लिए आवश्यक है, साथ ही मानदंडों में बदलाव भी हो।

श्रम शक्ति में भाग लेने के लिए महिलाओं का निर्णय और क्षमता विभिन्न सामाजिक–आर्थिक हालातों का परिणाम है जिसमें शिक्षा प्राप्ति, विवाह की आयु और सामाजिक मानदंड शामिल हैं जो सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भूमिका को निर्धारित करते हैं, (OECD, 2008)।[2] साक्ष्य के बढ़ते निकाय से पता चलता है कि लड़कियों की शिक्षा और व्यावसायिक कौशल विकास का बेहतर सशक्तिकरण संकेतकों जैसे कि परिवार के छोटे आकार, अधिक निर्णय लेने की जिम्मेदारी और बेहतर आय (असलम, 2014)[3] के साथ घनिष्ठ संबंध है।

ऐसे शोध जिन में साथ एकाधिक सर्वे के दौर में किशोर शामिल थे (Longitudinal studies) बताते हैं कि किशोरावस्था के दौरान शैक्षिक उपलब्धियों, स्वयं की पहचान बनाना जिसमें निर्णय लेने की क्षमता और कौशल शामिल हैं और समर्थनकारी वातावरण का युवाओं के व्यावसायिक विकास पर प्रभाव पड़ता है (शून एंड पार्सन्स, 2002; बायनर, 1998; काशेफपाकडेल एंड पर्सी, 2016; मान एट आल., 2020)।[4,5] झारखंड में विश्व बैंक के एक अध्ययन में पाया गया कि लगभग सभी लड़कियां उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरी करना चाहती हैं और 86 प्रतिशत लड़कियां घर से बाहर वेतन के लिए काम करना चाहती हैं। शोध ने स्थापित किया कि लड़कियों की शैक्षिक और रोज़गार की आकांक्षाएं उनकी आत्म–क्षमता और मानसिक दृढ़ता से निर्धारित होती हैं, जिन्हें 'मानव पूंजी' का महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि समर्थनकारी और सहायक वातावरण का आत्म–क्षमता के साथ एक महत्वपूर्ण परस्पर संबंध है (रॉय एट आल., 2016)।[6]

1 वेरिक, एस. (2014) विकासशील देशों में महिला श्रम शक्ति की भागीदारी। IZA वर्ल्ड ऑफ़ लेबर 2014: 87 doi: 10.15185/izavol.87

2 OECD- (2008)। जेंडर और सतत विकास–महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय भूमिका को अधिकतम करना। https://www.oecd.org/social/40881538.pdf से लिया गया

3 असलम, एम. (2014)। महिलाओं को सशक्त बनाना: शिक्षा और परिवर्तन के रास्ते, सभी वैश्विक निगरानी रिपोर्ट के लिए शिक्षा, संदर्भ संख्या 2014/ED/EFA/MRT/PI/0, UNESDOC डिजिटल लाइब्रेरी, 25 मार्च, 2020 को एक्सेस किया गया।

4 शून, आई. एंड पार्सन्स, एस. (2002)। भविष्य के करियर और व्यावसायिक परिणामों के लिए किशोरों की आकांक्षाएं। व्यावसायिक व्यवहार के जर्नल। खंड 60, अंक 2, पृष्ठ 262–288. से लिया गया: https://www.sciencedirect.com/science/article/abs/pii/S0001879101918676; बायनर, जॉन. (1998)। स्कूल से काम तक के बदलाव में शिक्षा और परिवार की पहचान के घटक। व्यवहार विकास के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 22. 29–53। 10.1080/016502598384504. से लिया गया: https://www.researchgate.net/publication/232444408_Education_and_Family_Components_of_Identity_in_the_Transition_from_School_to_Work

5 कशेफपाकडेल, ई. टी और पर्सी, सी. (2016)। करियर शिक्षा जो काम करती है: ब्रिटिश कोहोर्ट स्टडी का उपयोग करते हुए एक आर्थिक विश्लेशण। शिक्षा और कार्य जर्नल। DOI: 10.1080/13639080.2016.1177636. से लिया गया: https://www.educationandemployers.org/wp-content/uploads/2016/05/Career-education-that-works-an- Economic-analysis-using-the-British-Cohort-Study.compressed.pdf; मान, ए., डेनिस, वी., श्लीचर, ए., एख्तियारी, एच., फोर्सिथ, टी., लियू, ई. और चेम्बर्स, एन. (2020)। अपने मन की नौकरी? किशोरों की करियर आकांक्षाएं और काम का भविष्य. OECD- से लिया गया: https://www.oecd.org/berlin/publikationen/Dream-Jobs.pdf

6 रॉय, एस. और मॉर्टन, एम.एच. और भट्टाचार्य, एस. (2016)। हिडन ह्यूमन कैपिटल: साइकोलॉजिकल एम्पावरमेंट एंड एडोलेसेंट गर्ल्स एस्पिरेशंस इन इंडिया पॉलिसी रिसर्च वर्किंग पेपर सीरीज. 7792. विश्व बैंक. से लिया गया: https://ideas.repec.org/p/wbk/wbrwps/7792.html

ओवरसीज डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट (ODI) की 2016 की एक रिपोर्ट में शिक्षा, कौशल विकास और प्रशिक्षण, गुणवत्तापूर्ण काम तक पहुंच और जेंडर मानदंडों सहित महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण के लिए दस समर्थनकारी या बाधा कारणों की पहचान की गई है।[7] अध्ययन यह स्थापित करता है कि किशोरियों के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए आत्म–क्षमता, आकांक्षाएं, कौशल और समर्थनकारी वातावरण प्रमुख कारक हैं। ICRW की 2013 में की गयी आर्थिक सशक्तीकरण के कार्य क्षेत्र अध्ययन से यह भी पता चला है कि किशोरियों के कार्यक्रमों में जेंडर परिप्रेक्ष्य को शामिल करने और आजीविका के अवसर पैदा करने में सक्षम होने के लिए बाजार से जोड़ना अथवा एक समर्थनकारी वातावरण बनाने की आवश्यकता है (नंदा एट आल., 2013)।[8]

किशोरियों के लिए व्यापक जीवन और रोज़गार योग्यता कौशल कार्यक्रम की इस तत्काल आवश्यकता के जवाब में प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम की कल्पना की गई थी।

प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम की रुपरेखा

प्लान–इट गर्ल्स किशोरियों के लिए स्वयं के संसाधनों का प्रयोग करते हुए निर्णय लेने की क्षमता बनाने और उनकी आकांक्षाओं का समर्थन करने के लिए जेंडर समानता को बढ़ावा देने के लिए एक बहु–स्तरीय और बहु–हितधारक कार्यक्रम है। कार्यक्रम एक पारिस्थितिक ढांचे का उपयोग करता है जो किशोरियों पर केंद्रित है। यह कक्षा 9 से 12 तक की लड़कियों को जेंडर परिपेक्ष्य के साथ तैयार करता है, जिसमें उनकी जेंडर, सत्ता, पितृसत्ता और जेंडर का उनके दिन–प्रतिदिन के जीवन अवसरों और संसाधनों तक पहुंचने की उनकी क्षमता पर प्रभाव की समझ बनाता है। यह दो वर्षीय जेंडर–एकीकृत पाठ्यक्रम और करियर मेले के माध्यम से उनके जीवन कौशल और रोज़गार कौशल को बनाता है जो उन्हें स्कूल से रोज़गार की तरफ जाने के लिए मदद करेगा। यह कार्यक्रम महत्वपूर्ण हितधारकों जैसे किशोर साथियों, माता–पिता, शिक्षकों और समुदाय के सदस्यों के साथ जेंडर मानदंडों को बदलने और लड़कियों को उनकी क्षमता तक पहुंचने के लिए एक सही वातावरण बनाने के लिए भी तैयार करता है। यह कार्यक्रम दिल्ली[9] के 20 माध्यमिक विद्यालयों (10 बालिका विद्यालयों और 10 बाल विद्यालयों) और झारखंड के दो जिलों – देवघर और पाकुड़ में 10 सह–शिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में लागू किया गया था। इन स्थानों की विविधता ने शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में मॉडल के परीक्षण की अनुमति दी।

कार्यक्रम को स्टूडेंट पार्टनरशिप वर्ल्डवाइड द्वारा लागू किया गया था, जिसे दिल्ली और झारखंड के दोनों कार्यक्रम स्थलों पर रेस्टलेस डेवलपमेंट (RD) के रूप में जाना जाता है, जबकि कार्यक्रम के दिल्ली में शिक्षकों के शामिल होने वाले घटक को प्रवाह द्वारा लागू किया गया था।

कार्यक्रम के उद्देश्य

- **उद्देश्य 1:** पेस (पेस) पाठ्यक्रम, जो की पेज कार्यक्रम के दौरान विकसित किया गया, को लागू करके लड़कियों की आत्म–क्षमता और रोज़गार क्षमता में सुधार करना।
- **उद्देश्य 2:** स्कूलों में लड़कों के साथ और परिवारों तथा अन्य सामुदायिक सदस्यों के माध्यम से जेंडर–समान मानदंडों को बढ़ावा देकर लड़कियों की सफलता के प्रतिरोध के जोखिम को कम करना।
- **उद्देश्य 3:** शिक्षकों को बदलाव के चौंपियन और प्रतिनिधि बनने और उन्हें समान विचारधारा वाले व्यावसायिक नेटवर्क से जोड़ने के लिए समर्थन देकर कार्यक्रम को लागू करने के लिए प्रेरित करना।
- **उद्देश्य 4:** स्थानीय व्यवसायों के साथ प्रगतिशील और पारस्परिक रूप से मजबूत संबंधों के माध्यम से किशोरियों के लिए रोज़गार के मार्ग बनाना जिससे कि उन्हें सीखने के अवसर प्राप्त हों। प्लान–इट गर्ल्स लड़कियों के कौशल की प्राप्ति को व्यव्हार में लाना चाहता है।
- **उद्देश्य 5:** साक्ष्य–सूचित निवेश के माध्यम से कार्यक्रम को संस्थागत बनाना और बनाए रखना। सरकारी शिक्षा क्षेत्र और उद्योग के लिए हमारे मजबूत संबंधों का लाभ उठाते हुए, प्लान–इट गर्ल्स सामाजिक जिम्मेदारी (सरकार के कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व कानून द्वारा समर्थित) और महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाने में बढ़ती रुचि, के निर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए वर्तमान स्थिति का फायदा उठाएगी जो सार्वजनिक–निजी भागीदारी को भविष्य में कार्यक्रम को आर्थिक सहायता प्रदान कर सकती है।

---

7 हंट, ए. और सम्मान, ई. (2016)। महिला आर्थिक सशक्तिकरण: सक्षमता और बाधाओं को मार्ग निर्देशन करना। लंदन: विदेशी विकास संस्थान. से लिया गया: https://cdn.odi.org/media/documents/10683.pdf

8 नंदा, पी., दास, पी., सिंह, ए. और नेगी, आर. (2013)। भारत में किशोरियों की व्यापक आवश्यकताओं को संबोधित करना: आजीविका बनाने की क्षमता। नई दिल्ली: इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वीमेन।

9 गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल (GGSSS) और गवर्नमेंट बॉयज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल (GBSSS) एक ही स्कूल परिसर में दो पालियो में चलते हैं और एक कॉमन स्कूल बिल्डिंग का उपयोग करते हैं। प्लान–इट गर्ल्स को 10 GGSS स्कूलों और उनके संबंधित 10 GBSS स्कूलों में लागू किया गया था, इस प्रकार दिल्ली के 20 स्कूलों में लागू किया जा रहा है।

कार्यक्रम की गतिविधियां

कार्यक्रम ने मुख्य उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए भागीदारी गतिविधियों का प्रयोग किया। **पेस पाठ्यक्रम** किशोरियों को पहचान, जेंडर, सत्ता, पितृसत्ता और उसका दिन–प्रतिदिन के जीवन पर प्रभाव, भावनाओं, रिश्तों, संचार, हिंसा की समझ, जेंडर और काम का जुड़ाव तथा आकांक्षाओं के साथ–साथ कौशल से संबंधित विचारों से लैस करने पर केंद्रित है। आकांक्षाओं का मानचित्रण करना, लक्ष्य निर्धारित करना, बायोडाटा विकसित करना, इंटरव्यू की तैयारी करना और काम, तनाव और धन का प्रबंधन करना। परिवेश के दृष्टिकोण के एक भाग के रूप में, दिल्ली और झारखंड में इन लड़कियों के किशोर साथियों के साथ **जेम्स पाठ्यक्रम** का संचालन किया गया था।

दिल्ली में बालिकाओं के मूल्य, उनकी शिक्षा, जल्दी या जबरन शादी से संबंधित मुद्दों और बेटी की आकांक्षाओं के बारे में मां और बेटी के बीच बातचीत पर चर्चा करने के लिए चार सप्ताह में माताओं के समूहों के साथ साप्ताहिक बैठकें आयोजित की गई। जेंडर, किशोरावस्था, सीखने की शैली और लड़कियों के लिए एक सुरक्षित स्थान बनाने से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए शिक्षकों के साथ मासिक सत्र आयोजित किए गए। शिक्षकों ने पाठ्यपुस्तकों की जेंडर ऑडिटिंग और लड़कियों और उनके माता–पिता से उनकी जरूरतों को बेहतर ढंग से समझने के लिए उनके साथ जुड़ने जैसी व्यक्तिगत कार्य परियोजनाएं भी शुरू कीं।

झारखंड में कार्यक्रम में भाग लेने वाले लड़कियों और लड़कों ने सामुदायिक अभियानों का भी नेतृत्व किया। उन्होंने लड़कियों की शिक्षा और रोज़गार, और कम उम्र में शादी से संबंधित मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए रैलियां, घर–घर अभियान और रोल–प्ले आयोजित किए। पंचायत को किशोरियों की शिक्षा का समर्थन करने के लिए किए जा सकने वाले कार्यों को वचनबद्ध करने के लिए माता–पिता, पंचायत सदस्यों और अन्य स्थानीय सरकारी अधिकारियों तथा सामुदायिक हितधारकों के साथ बैठकें आयोजित की गईं। शिक्षकों के लिए, किशोरों की जरूरतों, जेंडर और संबंधित मुद्दों को समझने और लड़कियों के लिए पाठ्यक्रम से परिचित होने पर तीन कार्यशालाओं की एक श्रृंखला आयोजित की गई थी। संबंधित हितधारकों के साथ कार्यक्रम की गतिविधियों को नीचे दिए गए चित्र में दिखाया गया है (चित्र 1.1)।

यह रिपोर्ट दिल्ली और झारखंड में कार्यक्रम के क्रियान्वन के लिए की गयी गतिविधियों की प्रक्रियाओं की रूपरेखा प्रदान करती है। रिपोर्ट झारखंड में YFs, YRCs स्कूल कार्यान्वयन, सामुदायिक जुड़ाव और शिक्षकों के काम से संबंधित प्रक्रिया और महत्वपूर्ण घटकों का वर्णन करती है।[10] यह रिपोर्ट गतिविधियों और प्रक्रियाओं से संबंधित चुनौतियों सिफारिशों और सबसे अच्छी प्रथाओं पर प्रकाश डालती है।

चित्र 1: प्लान–इट गर्ल्स पारिस्थितिक मॉडल

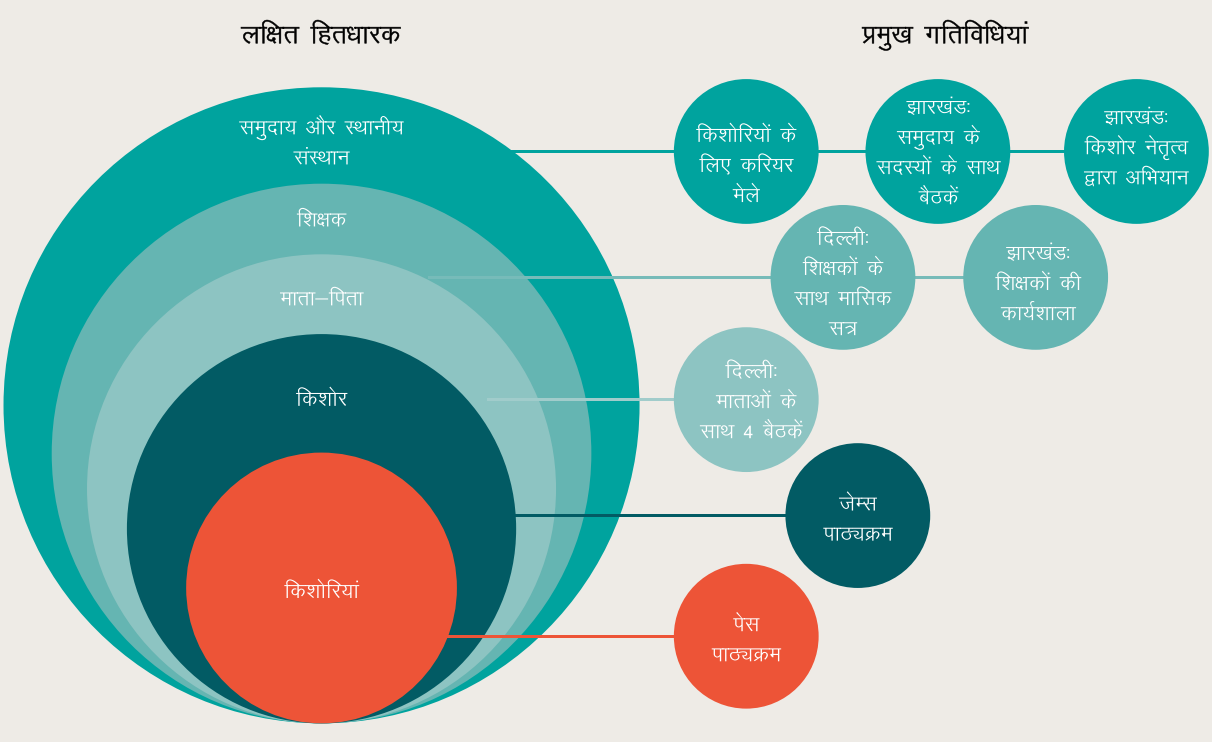

10 दिल्ली में शिक्षकों के प्रशिक्षण की कार्यान्वन कार्यनीति झारखण्ड से भिन्न थी और उस आलेख को इस शीर्षक के साथ प्रकाशित किया गया है 'Plan-It Girls: Process Documentation for Teacher's Intervention'।

युवा सहायक (युथ फैसिलिटेटर्स)

तर्काधार

प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम ने स्कूलों में किशोरियों और किशोरों के साथ–साथ एक लड़की के परिवेश में अन्य हितधारकों – माताओं, समुदाय के सदस्यों और शिक्षकों के साथ काम किया। ICRW के पेज (PAGE) जैसे पिछले कार्यक्रमों के अनुभव ने किशोरों के साथ कौशल–आधारित कार्यक्रमों के संचालन करने वाले युवाओं की प्रासंगिकता को दिखाया है। इसके अलावा, कार्यक्रम का क्रियान्वन करने के लिए सहभागी संस्था, RD ने पीयर एजुकेटर मॉडल के साथ काम किया जो युवाओं के साथ जुड़ाव की उपयोगिता को इंगित करता है।

ICRW और RD दोनों के अनुभव ने प्रदर्शित किया है कि यह मॉडल एक दूसरे के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालने का लाभ उठाता है। मॉडल इस आधार पर तैयार किया गया कि युवा अपने साथियों (समान उम्र और प्रोफ़ाइल) से अपनी चिंताओं को साझा करने और जानकारी और समर्थन प्राप्त करने की अधिक संभावना रखते हैं जो कि युवाओं का वयस्कों और उन से भिन्न पृष्ठभूमि के लोगों से जुड़ाव के विपरीत हैं।

किशोरों के रूप में समान समुदायों और सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से चयनित 18–28 वर्ष के आयु वर्ग में YFs से किशोरों और समुदाय दोनों के साथ जल्दी और मजबूत संबंध बनाने की उम्मीद की गई थी। इसी तरह, यह आशा थी कि किशोरियों और किशोरों का उनके साथ बेहतर आपसी समझ और जुड़ने की अधिक संभावना है।

चूंकि धरातल पर कार्यक्रमके क्रियान्वयन का उत्तरदायित्व YFs पर था, इसलिए दिल्ली और झारखंड दोनों कार्यक्रम स्थलों पर चयनित समुदायों के YFs को कार्यक्रम को संचालित करने और कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से अमल में लाने के साथ–साथ स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए चुना गया था।

पहचान और भर्ती

कार्यक्रम में YFs को सहकर्मी सलाहकार के रूप में देखा गया था जो सीधे किशोरों से जुड़ सकते थे और समुदाय के भीतर उनके आदर्श और सलाहकार बन सकते थे। इस प्रकार, YFs की पहचान, चयन और भर्ती स्कूलों के पास स्थित भौगोलिक समुदायों से की गई, जहां कार्यक्रम को दिल्ली और झारखंड में लागू किया जाना था। एक समुदाय–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाया गया और नौकरी विवरण सहित एक भर्ती पैक विकसित किया और बांटा गया। रेस्टलेस डेवलपमेंट ने स्थानीय NGOs के अपने मौजूदा नेटवर्क का भी लाभ उठाया ताकि जिन समुदायों में कार्यान्वयन स्कूल स्थित थे वहां विज्ञापन प्रसारित किया जा सके।

जबकि विशेष खासियतों, कौशल और अनुभव वाले संभावित उम्मीदवारों की पहचान करना महत्वपूर्ण था, कार्यक्रम ने YFs के लिए विभिन्न कार्यक्रम घटकों और अन्य कौशल पर प्रशिक्षण, हैंडहोल्डिंग और फीडबैक की एक बारीकियों पर ध्यान देते हुए प्रक्रिया की योजना बनाई थी। टीम ने ऐसे उम्मीदवारों की तलाश की, जिनकी आयु 18–28 वर्ष के बीच थी, जो कार्यक्रम के प्रतिभागियों (भौगोलिक एवं सांस्कृतिक रूप से) के समान पृष्ठभूमि से थे, और बोली जाने वाली और लिखित हिंदी में दक्षता के साथ–साथ अच्छा सम्प्रेषण और नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन करते थे। जिन उम्मीदवारों के पास युवाओं और अन्य सामुदायिक हितधारकों के साथ बैठकें आयोजित करने, जोखिम और जरूरतों का आकलन करने, और भागीदारी ग्रामीण मूल्यांकन करने का अनुभव था, उनको प्राथमिकता दी गई थी। संभावित उम्मीदवारों को चयन प्रक्रिया के लिए आमंत्रित किया गया था जिसमें एक लिखित परीक्षा और एक व्यक्तिगत इंटरव्यू के बाद एक ग्रुप डिस्कशन शामिल थी। भर्ती करने वाली टीम ने संभावित उम्मीदवारों का उपर्युक्त कौशल, कार्यक्रम टीम का हिस्सा बनने की प्रेरणा और हिंदी में उनकी दक्षता पर मूल्यांकन किया।

पहचान और भर्ती की प्रक्रिया के बाद, कार्यक्रम को लागू करने के लिए दिल्ली में कुल 26 YFs और झारखंड में 16 YFs साथ में दिल्ली में दो कार्यक्रम कार्यकारी (PEs) और झारखंड में तीन का चयन किया गया।

जैसा कि इरादा था, YFs का चयनित समूह उन्हीं समुदायों से आया था जहाँ से कार्यक्रम के प्रतिभागी थे और उनमें से कुछ ने उन स्कूलों में पढाई की थी जहाँ कार्यक्रम का क्रियान्वन किया जा रहा था।

तालिका 1: युवा सहायक (YF) और कार्यक्रम कार्यकारी की संख्या

	दिल्ली			झारखंड		
	महिला	पुरुष	कुल	महिला	पुरुष	कुल
युवा सहायक	20	6	26	11	5	16
कार्यकारी	1	1	2	2	1	3

नोटः भर्ती के समय, कार्यक्रम दल ने दोनों कार्यक्रम स्थलों के लिए एक सतत प्रतीक्षा सूची भी बनाए रखी, जो किसी भी YF के छोड़ कर जाने पर काम आयी।

युवा सहायकों का क्षमता निर्माण

YFs की चयन प्रक्रिया पूरी करने के बाद, कार्यक्रम की आवश्यकताओं के अनुरूप यह महत्वपूर्ण था कि YFs की क्षमता निर्माण की जाये। चूंकि कार्यक्रम का उद्देश्य किशोरियों को जीवन कौशल और रोज़गार कौशल से लैस करना और एक सक्षम वातावरण बनाना था, इसलिए प्रशिक्षण की योजना चरणबद्ध तरीके से की गयी। इस प्रशिक्षण की रूपरेखा में जैसे जेंडर परिप्रेक्ष्य, पाठ्यक्रम सामग्री की वैचारिक समझ, जीवन कौशल और कार्यक्रम को चलाने (फसिलिटेशन) के कौशल को शामिल किया गया था। टीम ने उन्हें उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के साथ–साथ कार्यक्रम की कार्यनीति और गतिविधियों की विस्तृत समझ भी प्रदान की। प्रशिक्षण के बाद, कार्यक्रम टीम ने पाठ्यक्रम सामग्री के लिए हैंडहोल्डिंग, फीडबैक और नियमित पर्यवेक्षण अभ्यास सत्र प्रदान किए। कार्यक्रम शुरू होने से पहले, RD की कार्यक्रम टीम ने भी वैचारिक प्रशिक्षण (विषयः जेंडर, शक्ति, पितृसत्ता और हिंसा) में भाग लिया। साथ ही प्रशिक्षण में पाठ्यक्रम सामग्री का अवलोकन किया गया जिस से YFs को आगे प्रशिक्षित करने और संभालने में मदद मिली ।

आधारभूत प्रशिक्षण

कार्यक्रम की शुरुआत से पहले, YFs ने जेंडर योजना बनाने और कार्यक्रम में अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों की समझ प्रदान करने के लिए पांच दिवसीय आवासीय वैचारिक प्रशिक्षण लिया। पहले व्यापक प्रशिक्षण के एक भाग के रूप में विभिन्न विषयों को कवर करते हुए ICRW और RD द्वारा वैचारिक प्रशिक्षण सामग्री तैयार की गई थीः

कार्यक्रम गतिविधियों को शुरू करने में YFs की भूमिकाएं और जिम्मेदारियांः

- स्कूलों में लड़कियों और लड़कों के साथ पाठ्यक्रम सत्र आयोजित करना;
- सामुदायिक जुड़ाव और गतिविधियां क्रियान्वित करना;
- YRCs की पहचान, संचालन और रख–रखाव;
- शिक्षकों को कार्यक्रम से जोड़ने में सहायक।

जेंडर, सत्ता और पितृसत्ता से संबंधित अवधारणाओं पर परिप्रेक्ष्य निर्माण।

RD की संगठनात्मक नीतियां जैसे धोखाधड़ी और रिश्वत विरोधी नीति, सामान्य आचार संहिता, और यौन उत्पीड़न विरोधी नीति।

प्लान–इट गर्ल्स के विचार–विमर्श एवं चर्चा सत्र में फॉर्म भरते हुए युवा सहायक (फैसलिटेटर्स) (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

वैचारिक प्रशिक्षण

चूंकि YFs स्वयं कार्यक्रम प्रतिभागियों के समान सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आए थे, इसलिए उनके लिए जेंडर की अवधारणाओं की एक अंदरूनी समझ विकसित करना जरुरी था। यह उन्हें अवधारणाओं को सीखने, अपने जीवन से उसे जोड़कर देखने और उस पर आत्म निरिक्षण करते हुए उसे अपने जीवन में उतारने की क्रिया से जोड़ना था जिससे कि वे जेंडर–एकीकृत पाठ्यक्रम – पेस लड़कियों के लिए पेस पाठ्यक्रम और लड़कों के लिए जेम्स पाठ्यक्रम को समझें और लागू कर पाएं। इसलिए, यह महत्वपूर्ण था कि पाठ्यक्रम का संचालन करने से पहले, YFs अपनी स्वयं की यात्रा के माध्यम से बुनियादी जेंडर दृष्टिकोण और पूर्वाग्रहों को पहचानने और आत्म निरिक्षण करने के लिए सक्षम हों ताकि पाठ्यक्रम की निष्ठा सुनिश्चित हो सके और इस संबंध में प्रतिभागियों के किसी भी प्रश्न/चिंता का समाधान किया जा सके। इसके लिए, दोनों कार्यक्रम स्थलों पर YFs को जेंडर, सत्ता, पितृसत्ता, जेंडर और हिंसा की विषयगत अवधारणाओं दो साल के कार्यक्रम के दौरान प्रति वर्ष दो प्रशिक्षण (पुनरावृति भी शामिल) दिए गए।

किशोरों के साथ सत्र आयोजित करने और समुदाय के सदस्यों के साथ मिलकर काम करने के लिए आवश्यक कौशल के साथ YFs को लैस करने के लिए फसिलिटेशन कौशल पर विशेष प्रशिक्षण सत्र भी आयोजित किए गए थे।

पाठ्यक्रम सामग्री प्रशिक्षण

पाठ्यक्रम सामग्री को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए – पेस लड़कियों के लिए पेस पाठ्यक्रम और लड़कों के लिए जेम्स पाठ्यक्रम – यह महत्वपूर्ण था कि YFs ने पाठ्यक्रम सामग्री पर व्यापक प्रशिक्षण ली हो, पाठ्यक्रम का संचालन करने में सहज हों और किशोर लड़कियों और लड़कों के सवालों का जवाब देने में सक्षम हों। इसके लिए कार्यक्रम के दो वर्षों के दौरान साप्ताहिक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए। YFs के लिए प्रशिक्षण सामग्री कार्यक्रम को स्कूलों में किए जाने वाले पाठ्यक्रम सत्रों के अनुरूप बनाया गया था और YFs को नियमित आधार पर प्रशिक्षण दिया गया था। प्रशिक्षण ने YFs को अपनी शंकाओं को स्पष्ट करने, प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए प्रश्नों पर चर्चा करने, अपने अनुभव साझा करने, मॉक सत्र आयोजित करके अभ्यास करने और टीम से प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए एक मंच प्रदान किया।

हैंडहोल्डिंग, फीडबैक और देखरेख

दो साल की कार्यक्रम अवधि के दौरान वैचारिक, पाठ्यक्रम सामग्री और फसिलिटेशन कौशल प्रशिक्षण के अलावा, YFs को रिपोर्टिंग, संचार कौशल (ईमेल और सोशल मीडिया के उपयोग सहित), लक्ष्य निर्धारण और समय प्रबंधन के लिए भी प्रशिक्षित किया गया। इन प्रशिक्षणों को व्यावसायिक कौशल को बेहतर बनाने के लिए रूपरेखा तैयार की गयी थी जो कि YFs को कार्यक्रम के बाद अपने करियर की योजना बनाने में सक्षम करेगा। इन प्रशिक्षणों के दौरान YFs को व्यावसायिक विकास योजनाओं पर चर्चा करने, विचारों का आदान–प्रदान करने और समस्या समाधान और जोखिम कम करने के उपाय सीखने का अवसर मिला। समीक्षा बैठकों और नियमित व्यक्तिगत फीडबैक सत्रों के माध्यम से YFs को पूरे कार्यक्रम की अवधि में सहायता प्रदान की गई। YFs को कार्यक्रम टीम द्वारा अवलोकन के आधार पर कक्षाओं में फैसिलिटेटर के रूप में उनके प्रदर्शन पर नियमित सुझाव और फीडबैक भी प्राप्त हुआ।

YFs को विभिन्न क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों और सम्मेलनों में शामिल होने के अवसर प्रदान किये गए, जिसके लिए उन्हें आवेदन करने और भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। कार्यक्रम के संचालन के दौरान, कार्यक्रम YFs को व्यावसायिक विकास और अन्य अवसर मिले जैसे कि अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों से मिलने के लिए WGCD मंच प्रदान किया, महामहिम बेल्जियम की महारानी की बैठक और यात्रा, जहां इन्होंने प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम पर एक लघु नाटक तैयार किया और प्रस्तुत किया। दिल्ली में YFs ने शिक्षा निदेशालय, दिल्ली द्वारा आयोजित मेगा करियर कॉन्क्लेव में भी भाग लिया और कार्यक्रम की अवधि के दौरान यूथ अड्डा[11] या यूथ हैंगआउट में भाग लिया।

युवा सहायकों की यात्रा

YFs युवा महिलाओं और पुरुषों का समूह था जिन्होंने कार्यक्रम को लागू किया और निरंतर सुझाव प्राप्त किया। उनकी व्यक्तिगत यात्राएं कार्यक्रम के एक भाग के रूप में उनके द्वारा किए गए परिवर्तन को भी दर्शाती हैं। कार्यक्रम के अंत में किए

11 वर्ष 2017 और 2018 में हर तीन महीने में प्रवाह, RD और संयुक्त राष्ट्र स्वयंसेवकों द्वारा संयुक्त रूप से युवाओं के लिए यूथ अड्डा या हैंगआउट का आयोजन किया गया था। यूथ अड्डा SDGs सीखने और चर्चा करने के लिए विविध पृष्ठभूमि के युवाओं को एक साथ लाया, और इन लक्ष्यों को आगे बढ़ाने और प्राप्त करने में उन युवाओं की भूमिका को बताया।

स्कूल में एक सत्र का संचालन करती युवा सहायक (फैसलिटेटर्स) (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

गए गुणात्मक शोध में दिल्ली और झारखंड के सभी YFs ने सर्वसम्मति से साझा किया कि प्लान–इट गर्ल्स का शुरुआती प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण प्रक्रिया से उन्होंने बहुत कुछ सीखा। पहचान, जेंडर असमानता, सत्ता, पितृसत्ता, हिंसा के विभिन्न रूपों से संबंधित कई अन्य विषय ऐसे थे जिनके बारे में उन्होंने स्वयं इस कार्यक्रम से पहले कभी नहीं सोचा था। प्रशिक्षण ने YFs को उनके जीवन में गहरे बैठे सामाजिक–सांस्कृतिक और जेंडर की समझ पर विचार और आत्म निरीक्षण करने के लिए तैयार किया।

YFs ने महसूस किया कि उनके पास शिक्षा जारी रखने और रोज़गार खोजने के लिए सीखने, विकास, परिवर्तन और दृढ़ता की अपनी कहानियों का उपयोग करने की क्षमता है। इसने उन्हें छात्रों के साथ एक मजबूत संबंध विकसित करने और समुदाय में लड़कियों और लड़कों के लिए स्थानीय रोल मॉडल बनने में सक्षम बनाया। YFs ने महसूस किया कि वे कार्यक्रम की सामग्री को अपने जीवन से जोड़कर देख सकते हैं, क्योंकि वे जानते थे कि लड़कियां घर और समुदाय में समान परिस्थितियों से जूझ रही थीं। यह लड़कियों के YFs के साथ खुलने और उन्हें दीदी और भैया (बड़ी बहन और बड़े भाई) के रूप में संबोधित करने और उनके साथ अपने विचारों और चिंताओं को साझा करने का एक कारण बताया गया। YFs द्वारा ऐसे कई उदाहरणों का उल्लेख किया गया है जहां लड़कियों ने स्कूल की पढ़ाई पूरी करने या कॉलेज में दाखिला लेने की अनुमति देने के मामले में उनके माता–पिता और परिवार के असहयोग के कारण उनका समर्थन मांगा। झारखंड की एक महिला YFs के शब्दों में, "मैं इसी समुदाय से हूं, इसलिए मुझे भेदभाव के बारे में पता है। एक लड़की क्या कर सकती है और क्या नहीं, यह हमारे दिमाग में शुरू से ही अंकित होता है। मैंने ऐसी ही स्थितियों का सामना किया है।

YFs ने बताया कि प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम उनके जीवन का एक अभूतपूर्व अनुभव रहा है, जिसने उन्हें अपने स्वयं की हिचक, पूर्वाग्रह को दूर करने और उन मुद्दों से निपटने में सक्षम बनाया, जिन्हें उन्होंने स्वयं पहले कभी संबोधित नहीं किया था। कार्यक्रम के दौरान, उन्होंने सहयोग, सम्प्रेषण और प्रभावी रूप से स्वयं के पक्ष में निर्णय के लिए सम्प्रेषण जैसे सॉफ्ट स्किल विकसित किए, साथ ही सार्वजनिक रूप से बोलने, प्रस्तुतीकरण करने, डेटाबेस बनाने और रखरखाव तथा रिपोर्ट बनाने जैसे तकनीकी कौशल विकसित किए। YFs ने अपनी व्यक्तिगत यात्रा को भी साझा किया जिसमें अपने परिवारों के भीतर घरेलू काम, वित्त, रिश्तों और शादी के बारे में वे प्रभावी रूप से स्वयं के पक्ष में निर्णय के लिए सम्प्रेषण में सक्षम थे, और इसका श्रेय उन्होंने कार्यक्रम के दौरान मिली सीख को दिया।

कार्यक्रम के बाद, अधिकांश YFs ने स्वयं सेवी संस्थाओं के साथ शिक्षा के क्षेत्र में, काम करना जारी रखा है। दिल्ली में, कुछ YFs और PEs को सतत विकास लक्ष्य 5 (SDG5) और परिवार नियोजन 2020 (FP2020) प्रतिबद्धताओं के लिए युवा नेतृत्व वाली जवाबदेही पर केंद्रित एक अन्य कार्यक्रम में रखा गया था, जबकि झारखंड में, उनमें से अधिकांश को भारतीय ग्रामीण सेवाएं[12] द्वारा भर्ती किया गया था जो विश्व बैंक समर्थित तेजस्वनी नामक कार्यक्रम पर काम करेंगी। YFs और PEs भी पूर्व छात्र के रूप में RD के साथ जुड़े हुए हैं और विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों में भाग लेने के विभिन्न अवसरों पर नियमित जानकारी प्राप्त करना जारी रखते हैं। उनमें से कुछ ने आतिथ्य सेक्टर में भी नौकरी हासिल की है और प्रशिक्षकों के रूप में काम कर रहे हैं।

12 भारतीय ग्रामीण सेवा (IGS) एक गैर–लाभकारी कंपनी है, जो कंपनी अधिनियम की धारा 25 के तहत पंजीकृत है। बड़ी संख्या में ग्रामीण उत्पादकों के लिए आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकार की व्यावसायिक सेवाओं का विस्तार करने के लिए, 1987 में व्यावसायिक सहायता के लिए विकास कार्य (PRADAN) द्वारा IGS को बढ़ावा दिया गया था।

प्लान–इट गर्ल्स के युवा सहायक कक्षा सत्र से पहले चर्चा में भाग लेते हुए (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

युवा सहायकों के विचार

दिल्ली

"मैंने सीखा है कि कुछ कदम हैं जो हम व्यक्तिगत स्तर पर उठा सकते हैं। मैं अपने परिवार और समुदाय के लिए एक उदाहरण बनना चाहता हूं और लोगों को जेंडर समानता के महत्व के बारे में शिक्षित करना चाहता हूं। मैंने अपने समुदाय के भीतर बदलाव देखा है और सीखा है कि जागरूकता बढ़ाने और सामुदायिक जुड़ाव का युवाओं के जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ सकता है।" – पुरुष YF, दिल्ली

"अब (कार्यक्रम के बाद) हमने एक मानसिकता बना ली है कि लड़कियां और लड़के कुछ भी कर सकते हैं; काम में कोई भेद नहीं है। मां–बाप भी बहुत बदल गए हैं... अब अगर हमें किसी बात के लिए अपने मां–बाप को ना कहना पड़े तो हम विनम्रता से करते हैं। हम हर चीज के लिए बातचीत करते हैं।" — महिला YF, दिल्ली

झारखंड

"मेरा परिवार मुझे नौकरी करने देने के खिलाफ था, लेकिन अब उन्होंने मेरे साथ समझौता कर लिया है। मेरे गाँव में मैं अकेली लड़की हूँ जिसने 2006–2007 में मैट्रिक पूरा किया था। उस समय तक किसी ने मैट्रिक नहीं किया था, अब लोग मुझसे प्रेरित हैं और अब हर साल गांव में 10 लड़कियां मैट्रिक के लिए बैठती हैं।" – महिला YF, देवघर

"मैं अपनी पत्नी को खाना पकाने या सफाई करने में भी मदद करता हूँ। वह भी काम कर रही है और जब हम घर वापस आते हैं तो मैं खाना बनाने में उसकी मदद करता हूं पहले मैं ये सब काम नहीं करता था। गाँव में ऐसा होता है कि पहले पति खाएगा, फिर पत्नी खाएगी और मैं इन सब बातों का पालन नहीं करता। मैं उससे (मेरी पत्नी से) कहता हूं कि हम साथ में खाना खाएंगे।" – पुरुष YF, देवघर

"सबसे अच्छा प्रशिक्षण वह था जो मुझे जेंडर और सत्ता पर मिला। एक खेल था जिसमें एक लड़की और एक लड़का होता है और अगर उन्हें रात में बाजार जाना है तो हमें बताना होगा कि बाजार में कौन जाएगा। हमारे समाज में, हर कोई लड़के को बाजार भेजना पसंद करता है।" – पुरुष YF, पाकुड़

चुनौतियां और उनसे निपटने की कार्यनीति

चुनौतियां	निपटने की कार्यनीतियां
कार्यक्रम के दौरान YFs की भर्ती, प्रशिक्षण और हैंडहोल्डिंग की प्रक्रिया में प्रमुख चुनौतियों में से एक काम छोड़ के जाने का उच्च दर था। दो साल की अवधि के दौरान कई YFs कार्यक्रम छोड़के चले गए।	चूंकि YFs उस आयु सीमा में हैं जिनके चलायमान होने की उम्मीद है, इसलिए पहले से ही कुछ YFs के काम छोड़के जाने की स्थिति कि परिकल्पना करते हुए वैकल्पिक व्यवस्था की कार्यनीति बनाना आवश्यक है। इस के लिए एक डेटाबेस बनाये रखा गया, जिस में किसी भी YF के छोड़ के जाने पर, संभावित उम्मीदवार को तुरंत निश्चित प्रक्रिया द्वारा कार्यक्रम में शामिल किया गया। नए YF उम्मीदवारों को कार्यक्रम को संचालित करने के लिए आवश्यक प्रमुख अवधारणाओं और कौशल की समझ बनाने के लिए तुरंत एक व्यापक प्रवेश और प्रशिक्षण योजना के माध्यम से जोड़ा गया।
अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में जेंडर की अवधारणाओं के माध्यम से सीखना और रास्ता निकालना।	प्लान–इट गर्ल्स एक जेंडर–एकीकृत जीवन कौशल और रोज़गार कौशल कार्यक्रम था, इस प्रकार गतिविधियों को शुरू करने से पहले जेंडर दृष्टिकोण के निर्माण की आवश्यकता थी। टीम ने निरंतर सहयोग प्रदान किया, क्योंकि YFs ने स्वयं अपने परिवार और समुदाय में जेंडर मानदंडों को बदलने की पहल की।

सीख और अनुशंसाः

- **उच्च गुणवत्ता की वैचारिक, सामग्री और सॉफ्ट–स्किल प्रशिक्षण में निवेशः** प्लान–इट गर्ल्स जैसे कार्यक्रम में, YFs की टीम स्कूलों और समुदायों में कार्यक्रम का चेहरा है और आधार बनाती है। इसलिए, यह अनिवार्य हो जाता है कि वे सभी कार्यक्रम हितधारकों के साथ विश्वास और तालमेल बनाते हुए कार्यक्रम के सभी पहलुओं का सटीक रूप से प्रतिनिधित्व करने में सक्षम हों। इसके लिए, यह अत्यधिक जरुरी हो जाता है कि कार्यक्रम गहन और व्यापक प्रशिक्षण में निवेश करें जिसमें कार्यक्रम के सभी पहलुओं को शामिल किया जाए। प्रशिक्षण में प्रमुख अवधारणाएं शामिल हैं जिन पर पाठ्यक्रम और कार्यक्रम की सामग्री आधारित है। यह सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से पुनरावृत्ति होना भी उतना ही आवश्यक है जिससे कि YFs कार्यक्रम के औचित्य और हितधारकों के लिए अपेक्षित परिणामों सहित अवधारणाओं को समझें, और अपने जीवन में उतार पाएं। नियमित प्रशिक्षण भी सभी सवालों और चिंताओं पर राय देने के लिए, उनकी बात सुनने के लिए और समर्थन सुनिश्चित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

- **लगातार सहयोग और समर्थन प्रदान करनाः** प्लान–इट गर्ल्स ऐसा कार्यक्रम है, जो एक जेंडर–एकीकृत और पारिस्थितिकी तंत्र के दृष्टिकोण को अपनाता है। इसके तहत YFs गहरे बैठे पितृसत्तात्मक मानदंडों को संबोधित कर रहे हैं और चुनौती दे रहे हैं। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपने व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन में जेंडर मानदंडों से जूझ पाएं, जिसमें अक्सर पीछे हटना और निरंतर प्रभावी रूप से स्वयं के पक्ष में निर्णय के लिए सम्प्रेषण शामिल है। इसलिए यह बहुत जरुरी है कि कार्यक्रम के दौरान उनकी व्यावसायिक और भावनात्मक जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें कार्यक्रम की टीम से समर्थन प्राप्त हो। कार्यक्रम के अंतर्गत YFs में नेतृत्व कौशल के निर्माण में समय देने की भी जरुरत है। इस संदर्भ में मेंटरशिप, मार्गदर्शन और कार्य उनको सौंपना प्रमुख चीजें हैं। प्लान–इट गर्ल्स में, दिल्ली और झारखंड में YFs की प्रत्येक टीम को PEs द्वारा समर्थित किया गया था, जिन्हें सहायक परियोजना समन्वयकों और परियोजना प्रबंधकों द्वारा समर्थित किया गया था। व्यक्तिगत और टीम के मनोबल को बनाए रखने के लिए रिपोर्टिंग ढांचे में स्पष्टता अहम है।

- **एक दूसरे से सीखने को बढ़ावा देना और अन्य अवसरों प्रदान करनाः** YFs की क्षमता का निर्माण करने और उन्हें एक्सपोजर और सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए, उन्हें कार्यक्रम के बाहर की गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसने उन्हें अपने व्यक्तिगत करियर की प्रगति के बारे में सोचने और अपने भविष्य के लिए प्रभावी ढंग से योजना बनाने में सक्षम बनाया। उदाहरण के लिए, कार्यक्रम में YFs ने दोनों कार्यक्रम स्थलों पर अन्य संगठनों द्वारा आयोजित किए जा रहे विभिन्न युवा कार्यक्रमों में भाग लिया।

- **युवा सहायकों के काम छोड़के जाने की स्थिति की परिकल्पना करते हुए पहले से वैकल्पिक व्यवस्था की कार्यनीति बनानाः** जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, कार्यक्रम में YFs के बीच काम छोड़ना एक प्रमुख चुनौती के रूप में सामने आया। हालाँकि, यह अपेक्षित था क्योंकि युवा नए अवसरों की खोज के दौर में हैं। इसे संबोधित करने के लिए, यह सलाह दी जाती है कि कार्यक्रमों को बनाए रखने और समय–समय पर संभावित उम्मीदवारों के तैयार रोस्टर को अपडेट करने की योजना बनाई जाए, जिन्हें छोड़ के जाने पर नियुक्त किया जा सकता है। साथ ही, नए भर्ती हुए लोगों के प्रशिक्षण के लिए कार्यक्रम की योजना बनानी चाहिए। YF प्रशिक्षणों में निवेश करने, उन्हें नियमित और लगातार सहयोग प्रदान करने और एक दूसरे से सीखने के लिए समर्थन और अवसर प्रदान करने पर उपरोक्त अनुशंसा महत्वपूर्ण हो जाती हैं।

किशोरियों और किशोरों के साथ स्कूल आधारित पाठ्यक्रम को लागू करना

कार्यक्रम के स्कूल में कार्यान्वयन का उद्देश्य कार्यक्रम के दो प्रमुख उद्देश्यों को संबोधित करना है:

- पेस (P.A.C.E.) पाठ्यक्रम को किशोरियों के लिए[13] स्कूल में लागू करके उनकी आत्म–क्षमता और रोज़गार क्षमता में सुधार करना।
- स्कूलों में किशोरों के साथ ICRW के जेम्स पाठ्यक्रम को लागू करके जेंडर–समान मानदंडों को बढ़ावा देकर लड़कियों की सफलता के प्रतिरोध के जोखिम को कम करना।

प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम का उद्देश्य 14–17 वर्ष की आयु वर्ग की किशोरियों को जीवन कौशल और रोज़गार कौशल से लैस करके उनकी निर्णय क्षमता को बढ़ाना था। कार्यक्रम का उद्देश्य किशोरियों का एक समूह बनाना था, जिनके पास स्कूल से रोज़गार में जाने के लिए 'जीवन कौशल और रोज़गार कौशल' हो। चूंकि यह कार्यक्रम स्कूलों में लागू करने के लिए तैयार किया गया था, इसलिए यह परिकल्पना की गई थी कि कक्षा 9 और 11 की लड़कियों को दो वर्षों में इनपुट प्रदान किया जाएगा और इसके बाद क्रमशः कक्षा 10 और 12 तक जारी रखा जायेगा। इस प्रकार, पाठ्यक्रम को कक्षा में 30–40 मिनट के समूह सत्रों के रूप में तैयार किया गया था जिसे YFs क्रियांवित करते थे। पेस पाठ्यक्रम एक 34–घंटे का पाठ्यक्रम है जो दो कार्य क्षेत्र पर केंद्रित है और प्रत्येक कार्य क्षेत्र में दो मॉड्यूल थे जो नीचे सूचीबद्ध हैं:

कार्य क्षेत्र 1: सशक्तिकरण

- मॉड्यूल 1– खुद की पहचान और जागरूकता, जेंडर, सत्ता और पितृसत्ता, शारीरिक गरिमा और भावनाएं और रिश्ते
- मॉड्यूल 2– आत्म–क्षमता – सम्प्रेषण, सत्ता और संबंध और हिंसा को समझना

कार्य क्षेत्र 2: रोज़गार क्षमता

- मॉड्यूल 3– साधन पूर्णता – जेंडर और आकांक्षाएं, आकांक्षा मानचित्रण और लक्ष्य निर्धारणएवं कौशल
- मॉड्यूल 4– रोज़गार योग्यता – कार्य, कार्य प्रबंधन और उद्यमिता के लिए तैयारी

समूह सत्र अनुभवात्मक शिक्षण के सिद्धांतों पर आधारित थे। सत्रों के अलावा, लड़कियों को पेस कार्य पुस्तिकाएँ भी मिलीं जो कि प्रत्येक मॉड्यूल के लिए संबंधित सत्र गतिविधियों के साथ एक मुख्य संदेशों को उजागर करने और सुदृढ़ करने और घर पर चर्चा उत्पन्न करने के लिए थीं।

चूंकि इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूल से रोज़गार में जाने के लिए था, सत्र के अंत में, गैर–पारंपरिक आजीविका पर विशेष ध्यान देने के साथ स्थानीय रूप से मौजूद प्रशिक्षण और नौकरी के अवसरों से संबंधित जानकारी प्रदान करने के लिए करियर मेलों का आयोजन किया गया।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि लड़कियों को अपने किशोर साथियों के प्रतिरोध का सामना न करना पड़े, जेम्स पाठ्यक्रम को लड़कों के साथ लागू किया गया ताकि जेंडर समानता को बढ़ावा दिया जा सके और छात्रों को आलोचनात्मक सोच और आत्म–निरिक्षण में शामिल करके हिंसा को कम किया जा सके। पाठ्यक्रम में जेंडर, हिंसा, शारीरिक परिवर्तन, रिश्तों, भावनाओं, सम्प्रेषण और समस्या समाधान के विषयों पर 24 सत्र शामिल हैं। पेस के समान पाठ्यक्रम, सत्रों में प्रतिभागियों को व्यस्त रखने के लिए कई गतिविधियाँ शामिल हैं, जिनमें रोले प्ले, खेल और वाद–विवाद शामिल हैं। इन सत्रों का संचालन YFs द्वारा उन लड़कों के साथ किया गया जो लड़कियों के समान स्कूल और कक्षा में पढ़ते थे।

दिल्ली और झारखंड दोनों में प्रशासन और स्कूलों ने साफ़ किया कि वे केवल लड़कियों के सत्र के लिए महिला YF और लड़कों के सत्र के लिए पुरुष YF की अनुमति देंगे। झारखंड के सह–शिक्षा विद्यालयों में भी लड़के और लड़कियों के लिए अलग–अलग सत्र आयोजित किए गए। इस जानकारी के आधार पर, दोनों कार्यक्रम स्थलों के लिए स्कूल कार्यान्वयन की कार्यनीति तैयार की गई थी।

13 बड़ी किशोरियों के लिए P.A.C.E. पाठ्यक्रम का पहला मसौदा ICRW द्वारा मैकआर्थर फाउंडेशन द्वारा समर्थित एक हस्तक्षेप अनुसंधान परियोजना, लड़कियों के सशक्तिकरण और रोज़गार के लिए योजना (PAGE) के हिस्से के रूप में विकसित किया गया था। यूथ फैसिलिटेटर्स के साथ लर्निंग सर्कल्स के माध्यम से पाठ्यक्रम का पुनरीक्षण और समीक्षा की गई। पाठ्यक्रम को आगे ICRW द्वारा Gap Inc. के P.A.C.E. किशोरियों के पाठ्यक्रम के लिए अपनाया गया था। ICRW Gap Inc. का लाइसेंसशुदा भागीदार है और प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम के हिस्से के रूप में पाठ्यक्रम का उपयोग करता है।

स्कूल में किशोरियां (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

दिल्ली में पाठ्यक्रम कार्यान्वयन

राज्य स्तर – दिल्ली और झारखंड में शिक्षा विभाग से अपेक्षित प्रशासनिक अनुमति प्राप्त करने के बाद, किशोरों के साथ पाठ्यक्रम शुरू करने से पहले स्कूल के प्रमुख हितधारकों के साथ एक साझा दृष्टिकोण विकसित करना महत्वपूर्ण था जिसमें प्रधानाचार्य और शिक्षक शामिल थे। कार्यक्रम के अभिमुखीकरण के लिए प्रत्येक स्कूल में प्रधानाचार्यों और शिक्षकों के एक समूह के साथ बैठक आयोजित की गयी। एक कार्यनीति के रूप में, YFs के माध्यम से कार्यक्रम की पहचान बनाने के लिए, यह निर्णय लिया गया कि सभी तीन भागीदार संगठन YFs के साथ सभी बैठकों में भाग लेंगे। YFs ने इन बैठकों के समन्वय और संगठन का नेतृत्व किया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि वे कार्यक्रम का चेहरा बने और स्कूल के भीतर स्वीकार किए गए। इससे यह सुनिश्चित करने में भी मदद मिली कि कार्यक्रम सत्रों को नियमित सत्रों के रूप में स्कूल टाइम टेबल में शामिल किया गया था। प्रधानाचार्यों के साथ निरंतर और व्यवस्थित जुड़ाव से बाधाओं के बावजूद लगभग सभी स्कूलों में मजबूत संबंध बना।

चूंकि दिल्ली में सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल (GSSS) दो पाली में चलते हैं – लड़कियां सुबह की पाली (GGSSS) में पढ़ती हैं और लड़के एक ही स्कूल परिसर में दोपहर की पाली (GBSSS) में पढ़ते हैं और एक ही स्कूल भवन का उपयोग करते हैं, इसलिए महिला YFs को लड़कियों के स्कूल सौंपे गए थे और पुरुष YFs को लड़कों के स्कूल जो प्रशासन की सहमति के अनुसार था। सत्रों के प्रभावी कक्षा संचालन के लिए, दो YFs को एक साथ जोड़ा गया ताकि एक सत्र का नेतृत्व करे, जबकि दूसरा कक्षा के प्रबंधन और सत्र के आयोजन में सहायता करे।

कार्यक्रम के पहले वर्ष में कक्षा 9 और 11 में लड़कियों के साथ पेस पाठ्यक्रम शुरू किया गया था और वर्ष दो में उसी समूह सत्र लिए गए थे जब वो लड़कियां कक्षा 10 और 12 में थीं। इस तरह, पाठ्यक्रम के तहत प्रत्येक लड़की ने पहले वर्ष में कक्षा 9 और 11 कक्षा में और उसके बाद दूसरे वर्ष में भी, हर एक सप्ताह में प्लान–इट गर्ल्स के एक सत्र में भाग लिया।

जबकि लड़कियों के स्कूलों ने आवश्यक सहायता प्रदान की, लड़कों के स्कूलों के प्रमुखों की तरफ से प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। लड़कों के दुर्व्यवहार, आक्रामकता और उन्हें पढ़ाने के लिए बल प्रयोग करने की आवश्यकता जैसे कारण, अक्सर कार्यक्रम को समर्थन न देने के लिए बताये गए। शासकीय अनुमति के बावजूद, उन्होंने कार्यक्रम को पहले वर्ष में शुरू करने की अनुमति नहीं दी। टीम द्वारा लगातार सिफारिश और बातचीत के बाद और लड़कियों के स्कूलों के प्रमुखों से प्रतिक्रिया के बाद ही उन्होंने दूसरे वर्ष में सत्रों की अनुमति दी, हालांकि, तब भी सत्र आयोजित करने के लिए नियमित कक्षा का समय नहीं दिया। टीम ने हर दूसरे सप्ताह आयोजित दो घंटे की कार्यशाला के माध्यम से लड़कों के साथ जेम्स पाठ्यक्रम को संचालित करने की कार्यनीति तैयार करके इस चुनौती का सामना किया।

स्कूल में किशोरियां (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

तालिका 2: दिल्ली में प्रतिभागियों की कुल संख्या

	पहला वर्षः 2017			दूसरा वर्षः 2018		
	कक्षा 9	कक्षा 11	कुल	कक्षा 10	कक्षा 12	कुल
किशोरियां	4520	2601	7121	2272	1978	4250
किशोर	-	-	-	2312	1338	3650

कार्यक्रम के प्रतिभागियों के विचार

"इस कार्यक्रम ने मुझे महसूस कराया है कि हमारे समाज में सदियों से जेंडर असमानता प्रचलित रही है, लेकिन हम अक्सर इसकी अवहेलना करते हैं और इसे वैसे ही स्वीकार करते हैं जैसे यह है। बदलाव लाने के लिए, हर लड़की के लिए यह समझना बेहद जरूरी है कि वे पुरुषों के समान अधिकारों और अवसरों की हकदार हैं और वे इसे तभी हासिल कर सकती हैं, जब वे इसके लिए लड़ने को तैयार हों।" – किशोरी, दिल्ली

"हमें दिए गए सभी सत्रों में से, 'मर्द' होने पर एक सत्र था, जिसने हमें 'मर्द' शब्द का अर्थ सिखाया और एक आदमी होना कैसा लगता है। शुरुआत में मेरा इस पर बहुत अलग दृष्टिकोण था, लेकिन इस सत्र ने मुझे अपनी सोच बदलने में मदद की है।" – किशोर, दिल्ली

झारखंड में पाठ्यक्रम कार्यान्वयन

झारखंड में स्कूल कार्यान्वयन दिल्ली के समान था। हालांकि, मुख्य अंतर यह था कि यह कार्यक्रम झारखंड के सह–शिक्षा विद्यालयों में लागू किया गया था, जिसका अर्थ था कि लड़कियां और लड़के एक ही कक्षा में पढ़ते हैं। झारखंड में, राज्य सरकार द्वारा अनुमति केवल कार्यक्रम के पहले वर्ष के अंत में ही प्राप्त की जा सकी, जिसकी वजह से सत्र संचालन केवल कार्यक्रम के दूसरे वर्ष में शुरू किया जा सका, यानी, जब लड़कियां और लड़के कक्षा 10 और 12 में थे। पेस पाठ्यक्रम को लागू करने का नेतृत्व प्रशिक्षित महिला YFs द्वारा किया गया था, जबकि जेम्स पाठ्यक्रम का नेतृत्व पुरुष YFs द्वारा किया गया था और सत्रों की योजना एक साथ बनाई गई थी। सरकार की अनुमति की प्रतीक्षा करते हुए, कार्यक्रम टीम ने PEs और YFs की क्षमता निर्माण और स्कूल प्रशासन के साथ एक मजबूत संबंध बनाना जारी रखा। चूंकि सभी स्कूल सप्ताह में कम से कम दो बार प्लान–इट गर्ल्स सत्र के लिए समय आवंटित करने के लिए सहमत हुए, कार्यक्रम के पहले वर्ष में बीते हुए समय की भरपाई करने में टीम सक्षम थी।

झारखंड में, स्कूल में छात्राओं की उपस्थिति कम पाई गई। जब वे कक्षा 9 और 11 में थीं, तब लड़कियों के साथ किए गए बेसलाइन अध्ययन से पता चला कि लड़कियां महीने में औसतन 14 दिन स्कूल नहीं जाती थीं। इस चुनौती से निपटने के लिए टीम ने लड़कियों को सूचना भेजने के लिए प्रधानाचार्यों के साथ काम किया और लड़कियों को स्कूल जाने के लिए प्रेरित करने के लिए पंचायत स्तर पर बैठकें भी कीं। उपस्थिति में सुधार के बावजूद, यह देखा गया कि शिक्षकों की कमी, निजी ट्यूशन के लिए जाने को प्राथमिकता, स्कूल से दूरी और मौसमी बाढ़ सहित विभिन्न कारणों से छात्राओं की स्कूल में नियमित उपस्थिति कम थी।

झारखंड में, पेस और जेम्स सत्र क्रमशः लड़कियों और लड़कों के साथ के अलावा, कार्यक्रम में बाल विवाह और लड़कियों की शिक्षा के मूल्य पर प्रश्नोत्तरी, वाद–विवाद और चित्रकारी प्रतियोगिताएं और रोल–प्ले जैसे कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। ये गतिविधियां कार्यक्रम के बारे में जागरूकता बढ़ाने और युवा नेतृत्व वाले सामुदायिक अभियानों के लिए लड़कियों और लड़कों को जुटाने में भी बहुत महत्वपूर्ण साबित हुई। स्कूलों में शिक्षकों और छात्रों द्वारा कार्यक्रमो को बहुत अच्छे से स्वीकार किया गया। इन गतिविधियों ने लड़कियों और लड़कों के संवाद को बेहतर बनाने और शिक्षकों का समर्थन हासिल करने में भी मदद की।

तालिका 3: झारखंड में प्रतिभागियों की कुल संख्या

	पहला वर्षः 2017			पहला वर्षः 2018		
	कक्षा 9	कक्षा 11	कुल	कक्षा 10	कक्षा 12	कुल
किशोरियां	-	-	-	997	497	1494
किशोर	-	-	-	1047	556	1603

कार्यक्रम के प्रतिभागियों के विचार

"मैंने हम पर जेंडर के प्रभाव और शरीर की गरिमा पर दिए गए पाठों से बहुत कुछ सीखा है। धीरे–धीरे मुझे अपने समाज में चली आ रही सामाजिक बुराई के खिलाफ आवाज उठाने के लिए आत्म विश्वास है। मैं अपनी माँ से सत्रों से मिलने वाली सीख के बारे में बात करती थी, हालाँकि वह अशिक्षित है, लेकिन विस्तार से बताने के बाद उन्होंने मुझे बताया कि इन चीजों को सीखना आवश्यक है।" — बड़ी किशोरी, पाकुड़, झारखण्ड

"मुझे सभी सत्र बहुत पसंद हैं जिनमें मैंने भाग लिया है। मुझे लगता है कि 'मैं कौन हूं' और 'पावर वॉक' का पाठ मेरे लिए काफी उपयोगी था।" – छोटी किशोरी, पाकुड़, झारखंड

"मैं कक्षा 9 और 10 के दौरान थोड़ी शर्मीली थी, और मैं लोगों से ज्यादा बात नहीं करती थी। अब मैं अपने दोस्तों से बात करती हूं। मैंने नए दोस्त भी बनाए।"– बड़ी किशोरी, देवघर, झारखंड

दिल्ली और झारखंड के दोनों कार्यक्रम स्थलों पर, कार्यक्रम के अंतर्गत लड़कियों को दी गई कार्य पुस्तिकाएं उनके लिए घर पर अभ्यास करने और पाठ्यक्रम सत्रों के संदेशों को सुदृढ़ बनाने में काम आई। इस से भाई–बहनों और माता–पिता के साथ घर पर बातचीत शुरू करने के लिए एक साधन मिला।

स्कूलों में करियर मेले

इस कार्यक्रम का उद्देश्य लड़कियों को स्कूल से रोज़गार में जाने के लिए कौशल और जानकारी प्रदान करना था, स्कूल कार्यान्वयन प्रक्रिया में करियर मेलों की योजना बनाई गई थी। मेले भविष्य की संभावित शिक्षा और करियर विकल्पों से संबंधित जानकारी और एक्सपोजर प्रदान करने की दिशा में एक आवश्यक कदम थे। इस प्रकार लड़कियों के लिए रोज़गार के मार्ग तैयार हुए जिससे वे स्थानीय उद्योग के बारे में जानकारी पा सकें और विभिन्न क्षेत्रों में संभावित अवसरों की समझ प्राप्त कर सकें।

रोज़गार मॉड्यूल के पूरा होने के बाद करियर मेलों का आयोजन किया गया जिसमें जेंडर और कार्य पर सत्र, स्वयं की आकांक्षाओं का मानचित्रण, लक्ष्य निर्धारित करना, लक्ष्य प्राप्त करने की योजना बनाना, काम की तैयारी करना सीखना, कार्य प्रबंधन, समय और तनाव प्रबंधन शामिल थे। लड़कियों को स्थानीय स्तर पर उपलब्ध गैर–पारंपरिक आजीविका और प्रशिक्षण के अवसरों के बारे में जानकारी और एक्सपोजर पाठ्यक्रम के समापन के लिए करियर मेलों की योजना बनाई गई थी।

करियर मेलों ने लड़कियों को कौशल के अवसर प्रदान करने वाले और रिटेल, स्वास्थ्य देखभाल, आतिथ्य, सूचना प्रौद्योगिकी सहित विविध पारंपरिक और गैर–पारंपरिक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न संगठनों और एजेंसियों से परिचित होने का अवसर प्रदान किया। आजीविका कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करने वाले गैर सरकारी संगठनों और नागरिक समाज संगठनों, शिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण संस्थानों ने लड़कियों को करियर विकल्पों के बारे में जानकारी प्रदान की।

टीम ने स्थानीय कौशल प्रशिक्षण केंद्रों/संस्थानों और गैर सरकारी संगठनों से संपर्क किया जो विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न नौकरी भूमिकाओं के लिए निजी तौर पर वित्त पोषित और सरकार समर्थित प्रशिक्षण की पेशकश करते हैं। दोनों कार्यक्रम स्थलों पर करियर मेलों के आयोजन और संचालन की प्रक्रिया नीचे दी गई है।

दिल्ली के स्कूलों में करियर मेले

उच्च शिक्षा के संभावित विकल्पों की जानकारी के साथ–साथ लड़कियों को स्थानीय रूप से उपलब्ध कौशल, प्रशिक्षण और नौकरी के अवसर प्रदान करने के लिए करियर मेलों का आयोजन किया गया, जो स्वरुप में गैर–पारंपरिक भी थे। लड़कियों को दिए गए अवसरों को भी उनकी रुचियों और स्किल सेट के साथ मिलान करना था। इस उद्देश्य के लिए, टीम ने राज्य शिक्षा विभाग के शैक्षिक, व्यावसायिक, मार्गदर्शन और परामर्श ब्यूरो (EVGCB) के साथ सहयोग किया, जिसने छात्रों के करियर के हितों का आकलन करने के लिए एक मूल्यांकन किया था। टीम को लड़कियों की रुचि के क्षेत्रों और आकांक्षाओं पर EVGCB विशेषज्ञों से इनपुट प्राप्त हुए।

दिल्ली में करियर मेलों को आयोजित करने के लिए पांच चरणों वाली प्रक्रिया का पालन किया गया था:

1) भावी कौशल प्रशिक्षण केंद्रों/संस्थानों/गैर सरकारी संगठनों/फाउंडेशनों का मानचित्रण, पहचान और चयन;
2) स्कूलों के कार्यक्रम के अनुरूप करियर मेले की तिथियों को अंतिम रूप देने के लिए प्रधानाचार्यों की बैठक
3) EVGC ब्यूरो, शिक्षा निदेशालय दिल्ली (DoE), राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार (GNCT) की बैठक और संबंधित स्कूलों में करियर मेलों के लिए प्रति स्कूल दो व्यावसायिक परामर्शदाताओं की भागीदारी और आवंटन सुनिश्चित करना;
4) करियर मेले से सम्बंधित लॉजिस्टिक योजना के उद्देश्य और अपेक्षाओं के बारे में स्पष्ट जानकारी प्रदान करने के लिए चुने गए एजेंसियों की ब्रीफिंग;
5) करियर मेलों का सुचारू रूप से संचालन सुनिश्चित करने के लिए संबंधित YFs की योजना और तैनाती।

करियर मेलों से पहले, सरकारी समर्थन हासिल करने और सरकारी एजेंसियों के साथ करियर मेलों के लिए संबंध स्थापित करने के लिए RD की कार्यक्रम टीम ने कई अवसरों का लाभ उठाया जैसे कि दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित करियर कॉन्क्लेव और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) द्वारा आयोजित रोज़गार मेला। दिल्ली में, प्रत्येक शामिल स्कूल के लिए, कुल मिलाकर 10 करियर मेले आयोजित किए गए।

प्लान–इट गर्ल्स द्वारा आयोजित करियर मेले में युवा सहायकों (फैसिलिटेटर्स) से संवाद करती किशोरियां (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

किशोरियों और भाग लेने वाले उद्योग सहभागियों के विचार

"मैं एक डॉक्टर बनना चाहती थी, लेकिन मैं कला की छात्रा हूं। इसलिए, मैं चिंतित थी कि मैं आर्ट्स स्ट्रीम के माध्यम से चिकित्सा क्षेत्र में कैसे प्रवेश कर पाऊंगी। प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम द्वारा आयोजित करियर मेले ने मुझे कला क्षेत्र के माध्यम से चिकित्सा क्षेत्र में उपलब्ध करियर विकल्पों के बारे में सिखाया। मुझे पता है कि मेरे पास एक विकल्प के रूप में हेल्थकेयर सेक्टर है।"– बड़ी उम्र की किशोरी, दिल्ली

"मैंने अपने स्कूल में आयोजित करियर मेले से बहुत सी चीजें सीखीं, जैसे; करियर कैसे चुनें और मैं किन विभिन्न क्षेत्रों में आवेदन कर सकती हूं। "– बड़ी उम्र की किशोरी, दिल्ली

"करियर मेला छात्रों के लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ। मेले में उन्नति फाउंडेशन का प्रतिनिधित्व करना एक अद्भुत अनुभव था। इसने हमें उन युवाओं के साथ बातचीत करने का मौका दिया, जिन्हें नौकरियों की जरूरत है। प्रवेश/अवसरों के बारे में पूछताछ करने पर हमें उनसे अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है" – उन्नति फाउंडेशन (भाग लेने वाली एजेंसी)

"करियर मेला विभिन्न क्षेत्रों में अपना करियर बनाने के इच्छुक युवाओं तक पहुंचने का एक अच्छा मंच था। इसने हमें अपने लक्षित लाभार्थियों से जुड़ने में मदद की और यह विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण और प्लेसमेंट कार्यक्रमों को चलाने में शामिल गैर सरकारी संगठनों के लिए एक बढ़िया साधन है और लड़कियों को भी उनके करियर के लिए कई विकल्प मिलते हैं।"– एताशा सोसाइटी (भाग लेने वाली एजेंसी)

प्लान–इट गर्ल्स द्वारा आयोजित करियर मेले में भाग लेतीं किशोरियां (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

झारखंड के स्कूलों में करियर मेले

झारखंड में, देवघर और पाकुड़ दोनों जिला में टीमों ने संबंधित एजेंसियों, केंद्रों, संगठनों और संबंधित सरकारी अधिकारियों की पहचान करने और करियर मेलों के आयोजन के लिए आवश्यक बातचीत शुरू करने का एक ब्योरेवार ख़ाका तैयार किया।

चूंकि कार्यक्रम सह शिक्षा स्कूलों में लागू किया जा रहा था, कक्षा 10 और 12 के लड़कियों और लड़कों दोनों ने करियर मेले में भाग लिया। लड़कियों को पहली प्राथमिकता दी गई और प्रत्येक स्टाल पर जाने के लिए पर्याप्त समय मिला, उसके बाद उसी कक्षा के लड़कों को जाने का मौका मिला। कार्यक्रम के प्रतिभागियों के बाद कक्षा 9 और 11 के छात्रों को भी स्टालों पर जाने का अवसर मिला। अधिकांश लड़कियों के लिए, यह किसी कार्यक्रम के लिए उनका पहला एक्सपोज़र था, जिसने उन्हें विशेषतः स्थानीय रूप से उपलब्ध शिक्षा और करियर विकल्पों के बारे में जानकारी प्रदान की।

पाकुड़ में, स्कूलों की कंप्यूटर लैब का उपयोग महिला सशक्तिकरण और महिला रोज़गार में बदलते रुझानों से संबंधित वीडियो की स्क्रीनिंग की गयी, जिसके बाद स्कूल से पास होने के बाद लड़कियों के लिए विभिन्न करियर विकल्पों पर चर्चा हुई।

10 कार्यक्रम स्कूलों में आयोजित करियर मेलों में कुल 20 एजेंसियों और कौशल प्रशिक्षण देने वाले सहभागियों ने भाग लिया।

किशोरियों और भाग लेने वाले उद्योग साहभागियों के विचार

"करियर मेले से मेरे लिए सबसे बड़ी बात यह है कि लड़कियां कुछ भी हासिल कर सकती हैं और पैसा कमा सकती हैं। जो लड़कियां और महिलाएं बेरोज़गार हैं, उन्हें कमाना चाहिए और स्वाभिमान हासिल करना चाहिए।"– बड़ी उम्र की किशोरी, पाकुड़, झारखंड

"मुझे करियर मेले के दौरान प्रदान की जाने वाली औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITI), नर्सिंग, सिलाई प्रशिक्षण की जानकारी बहुत पसंद आयी। मैं भविष्य में कुछ हासिल करना चाहती हूं। ITI से जुड़ी जानकारी मेरे काम आई।" – बड़ी उम्र की किशोरी, देवघर, झारखंड

"करियर मेले का आयोजन कार्यक्रम द्वारा उठाए गए प्रभावी कदमों में से एक है। भविष्य के लिए अपने करियर की योजना बनाना छात्रों के लिए उपयोगी है। करियर – मेला छात्रों को शिक्षा जारी रखते हुए अपने करियर के बारे में जानकारी के आधार पर निर्णय लेने का अवसर देता है।" – एक उद्योग पार्टनर, पाकुड़, झारखंड

दिल्ली और झारखंड के लिए रोज़गार योग्यता डॉकेट

जहां करियर मेलों के दौरान उद्योग भागीदारों द्वारा विभिन्न पाठ्यक्रमों और नौकरी के अवसरों की जानकारी साझा की गई, वहीं टीम ने लड़कियों और शिक्षकों के लिए स्कूलों में यह जानकारी प्रदान कराना अनिवार्य समझा। डॉकेट को लड़कियों के लिए एक स्थायी सूचना संसाधन के रूप में प्रारूपित किया गया था ताकि वे सूचनाओं तक पहुंच सकें और अपने करियर की योजना बना सकें। ये डॉकेट दिल्ली और झारखंड में स्थानीय रूप से उपलब्ध पाठ्यक्रमों (व्यक्तिगत और ऑनलाइन) पर जानकारी इकठ्ठा करते हैं। डॉकेट्स में विभिन्न विषय धाराओं, डिग्री पाठ्यक्रमों, डिप्लोमा, ITIs और अन्य स्थानीय संस्थानों द्वारा पेश किए जाने वाले पाठ्यक्रमों के लिए सभी संभावित करियर विकल्पों की जानकारी थी और कार्यक्रम की समाप्ति के समय स्कूलों के साथ साझा की गई ।

चुनौतियां और उनसे निपटने की कार्यनीति

निम्नलिखित टेबल कार्यक्रम लागू की गई प्रक्रिया (करियर मेलों के आयोजन सहित) के दौरान आई चुनौतियों और उनसे निपटने की कार्यनीतियों को दर्शाती है।

चुनौतियां	निपटने की कार्यनीतियां
दिल्ली में सरकार की अनुमति के बावजूद, स्कूल किशोरियों और किशोरों के लिए पाठ्यक्रम को लागू करने की अनुमति देने के लिए इच्छुक नहीं थे। विशेष रूप से लड़कों के स्कूलों के प्रमुखों ने लड़कियों पर केंद्रित कार्यक्रम में लड़कों के लिए पाठ्यक्रम लागू करने में कोई महत्व नहीं देखा। प्लान–इट गर्ल्स सत्र के लिए समर्पित समय देने में लड़कियों के स्कूलों में से भी एक ने विरोध किया था। इसके अलावा, शुरुआती दौर में स्कूल भी YFs की नियुक्ति के खिलाफ थे, जिनसे लड़कियों और लड़कों के साथ कक्षाओं में पाठ्यक्रम का संचालन करने की उम्मीद की जाती थी।	इस चुनौती से निपटने के लिए स्कूल अधिकारियों के साथ एक मजबूत संबंध और तालमेल विकसित करने के लिए सभी तीन भागीदारों – ICRW RD और प्रवाह से कार्यक्रम टीम द्वारा नियमित रूप से स्कूल का दौरा और स्कूल प्रमुखों के साथ बैठकें की गईं। क्योंकि YFs ने इन अभिमुखीकरण और तालमेल के लिए की गयी बैठकों का नेतृत्व किया, इस से YFs द्वारा कार्यक्रम को संचालित करने और कार्यक्रम की पहचान बनाने के लिए स्कूल के अधिकारियों का सहयोग मिला । लड़कों के स्कूल में, टीम ने वर्कशॉप मोड में जेम्स पाठ्यक्रम को संचालित करने के लिए हर दो सप्ताह में दो घंटे के स्लॉट के लिए बातचीत की। सत्र शुरू करने के बाद, YFs की टीम बेहतर बातचीत करने में सक्षम थी, क्योंकि वे शिक्षकों और प्रमुखों का विश्वास जीतने में सक्षम थे। कुछ शिक्षकों ने शुरू के सत्रों की अवलोकन भी किया की और प्रधानाचार्यों को पॉजिटिव फीडबैक दिया । लड़कियों के स्कूलों में से एक का विरोध इस तथ्य के कारण भी था कि चार महीने के भीतर स्कूल के दो प्रधानाचार्य बदले गए थे और प्रभारी शिक्षक मै पूर्वाग्रह था कि NGO कार्यक्रम लड़कियों के लिए उपयोगी नहीं थे। इस चुनौती को कम करने के लिए टीम ने एक जरुरी योजना बनाई जिसमें महीने के अंतिम काम वाले दिन पर, जबकि प्रवाह टीम द्वारा शिक्षकों के साथ प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया जाता था YFs ने पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए दो घंटे की कार्यशाला आयोजित की।
झारखंड के स्कूलों में पर्याप्त शिक्षकों की कमी के कारण छात्रों की उपस्तिथि कम रही। त्योहारों और फसल कटाई के मौसम के दौरान छात्रों की उपस्थिति की अनियमितता भी विशेष रूप से एक बड़ी चिंता थी, क्योंकि इस समय छात्र स्कूल नहीं आते थे।	इस चुनौती को कम करने के लिए, टीम ने स्कूल अधिकारियों के साथ मिलकर काम किया। इसके अलावा, YFs ने घर–घर का दौरा किया और सामुदायिक बैठकों के दौरान इस मुद्दे को संबोधित किया एवं माता–पिता को अपनी बेटियों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित किया। किशोरावस्था को समझने के सत्र के साथ दोनों जिलों में आयोजित शिक्षक संवेदीकरण कार्यशालाओं ने भी शिक्षकों को अपने छात्रों के प्रति अधिक सहायक होने के लिए प्रोत्साहित करने में अच्छा काम किया।

प्लान–इट गर्ल्स के कक्षा सत्र में किशोरियों की सहभागिता (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

चुनौतियां	निपटने की कार्यनीतियां
झारखंड के कुछ स्कूलों में, शिक्षकों या बुनियादी ढांचे की कमी के कारण, कक्षा 12 के साथ पाठ्यक्रम काफी प्रभावित हुआ क्योंकि कोई औपचारिक कक्षाएं नहीं चल रही थीं और इसलिए, जो छात्र शैक्षणिक पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए ट्यूशन लेना पसंद करते थे, उन की उपस्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ा। ऐसे में, प्रधानाचार्यों ने YFs से शैक्षणिक पाठ्यक्रम का हिस्सा पढ़ाने का अनुरोध किया, इस तथ्य पर जोर देते हुए कि कक्षा 10 और 12 की बोर्ड परीक्षाएं थीं।	कुछ YFs (जो शैक्षणिक रूप से योग्य थे) ने स्कूलों को सहयोग देने के लिए शैक्षणिक पाठ्यक्रम के कुछ हिस्सों को पढ़ाया। इसके परिणामस्वरूप छात्रों की उपस्थिति में वृद्धि हुई और प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम के प्रति शिक्षकों की प्रतिक्रिया में सुधार हुआ। पेस पाठ्यक्रम के कुछ सत्रों को उन छात्रों के साथ भी दोहराया गया जो स्कूलों में सत्र के संचालन के दौरान छूट गए थे।
स्कूलों में सत्रों को संचालित करने का समय परिकल्पित समय से बहुत कम था। यह अक्सर पाठ्येत्तर गतिविधियों, बिना जानकारी के छुट्टियों और अन्य शैक्षणिक व्यस्तताओं के कारण होता था। टाइम टेबल के भीतर दिए गए समय स्लॉट प्राप्त करने के बावजूद, सत्रों को स्थगित करना पड़ा क्योंकि प्लान–इट गर्ल्स के सत्रों को शैक्षणिक पाठ्यक्रम के पूरा होने की तुलना में कम प्राथमिकता दी गई थी। यह स्थिति दिल्ली और झारखंड दोनों जगहों के लिए समान थी।	समय की कमी को पूरा करने के लिए, ज़ीरो पीरियड्स (असेंबली अवधि) में भी सत्रों का संचालन किया गया।[14] लड़कियों के साथ पेस पाठ्यक्रम के संचालन को सीमित समय में पूरा करने के लिए, टीम ने सत्रों किया और कुछ सत्रों को एक साथ जोड़कर जानकारी देने की कार्यनीति तैयार की, और गतिविधियों के माध्यम से जरुरी सूचना साझा और हाइलाइट करना सुनिश्चित किया गया। लड़कियों के अभिमुखीकरण के लिए कुछ सत्रों को छपे हुए पर्चे दिए गए जिसे वे अपने घर ले जा सकती थीं एक अन्य वजह जिसने इस चुनौती को कम करने में मदद की, वह था पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में कार्यपुस्तिकाओं का वितरण। चूंकि पाठ्यक्रम के चार मॉड्यूलों में से प्रत्येक के अनुरूप चार कार्यपुस्तिका थीं, हर सत्र की जरुरी सूचनाओं को उजागर करते हुए, लड़कियों के पास कक्षा के बाहर स्वयं से पढ़ने के लिए पाठ्यक्रम सामग्री भी थी।
रोज़गार क्षमता पर अंतिम मॉड्यूल के साथ पेस पाठ्यक्रम की समाप्ति के लिए दिल्ली और झारखंड में करियर मेलों की योजना बनाई गई थी। चूंकि लड़कियों को अंतिम मॉड्यूल के माध्यम से CV बनाने, नौकरी खोजने और कार्य प्रबंधन पर सत्रों के साथ बताया गया, करियर मेलों को लड़कियों के लिए उनकी भविष्य की शिक्षा और करियर की योजना बनाने के लिए विभिन्न विकल्प देना था। हालांकि, वर्ष की अंतिम तिमाही को देखते हुए–अक्टूबर से दिसंबर तक, स्कूल अधिकारियों को त्योहारों और आगामी प्री–बोर्ड परीक्षाओं (जो चुनावों के कारण पहले होने थे) को देखते हुए करियर मेले जैसे कार्यक्रम आयोजित करने की अनुमति देने के लिए राजी करना चुनौतीपूर्ण था। साथ ही, यह अनिवार्य था कि करियर मेलों से पहले पेस पाठ्यक्रम का संचालन पूरा किया जाए।	टीम ने पाठ्यक्रम समय पर पूरा करने के लिए कई कार्यनीतियां जैसे सत्रों को छपे हुए पर्चे और कार्यपुस्तिकाओं के साथ जोड़कर मेलों का आयोजन किया हेतु जिस में स्कूल अधिकारियों के साथ लगातार और निरंतर जुड़ाव से उनका सहयोग प्राप्त हुआ। टीम ने प्रधानाचार्यों के साथ कई बैठकें कीं और दिसंबर के दूसरे सप्ताह से पहले कार्यक्रम को पूरा करने के लिए समय देने पर बातचीत की। इसने पेस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने में मदद की। साथ ही, प्रधानाचार्यों को लड़कियों के लिए करियर मेलों के मूल्य और स्कूल के बुनियादी ढांचे या टाइम टेबल में कोई व्यवधान या रुकावट पैदा किए बिना व्यावसायिक रूप से आयोजित किए जाने का आश्वासन दिया गया था और इससे स्कूल अधिकारियों का सहयोग मिला।

14 दिल्ली सरकार के स्कूलों में एक 'ज़ीरो पीरियड' होता है जो असेंबली समय के दौरान होता है और यह कक्षा 10 और 12 के छात्रों के लिए चुने हुए विषयों को पढ़ाने के लिए है, जो बोर्ड परीक्षा में शामिल होने वाले हैं।

सीख और अनुशंसा

- **स्कूल में पाठ्यक्रम का संचालन जल्दी शुरू करना:** कार्यक्रम की योजना दो साल के हस्तक्षेप के रूप में कक्षा 9 और 11 में शुरू करने और कक्षा 10 और 12 के माध्यम से एक ही समूह के साथ काम करने के रूप में बनाई गई थी। हालांकि, टाइम टेबल में एकीकृत होने के बावजूद, टीम को सत्र जारी रखने के लिए शिक्षकों के साथ लगातार बातचीत करनी पड़ी, क्योंकि छात्रों को कक्षा 10 और 12 की बोर्ड परीक्षाओं में बैठने के लिए तैयार करने पर जोर दिया गया था, जो शैक्षणिक सफलता के लिए जरुरी है। झारखंड में इसका यह भी मतलब था कि जिन स्कूलों में शिक्षकों की कमी थी, वहां छात्र स्कूल नहीं आते थे, बल्कि निजी ट्यूशन के लिए समय का उपयोग करते थे। साथ ही कक्षा 8 और 9 के बाद ड्रॉप आउट सबसे अधिक है क्योंकि लड़कियां शैक्षणिक जरूरतों को पूरा करने में असमर्थ हैं और अक्सर शिक्षा की महत्ता को भी नहीं समझ पाती हैं। इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि कार्यक्रम कक्षा 9 से पहले शुरू किया जाना चाहिए ताकि लड़कियों को कक्षा 10 और 12 तक पहुँचने से पहले जानकारी और कौशल से लैस किया जा सके। चूंकि इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूल के बाद रोजगार पाना है, इसलिए कक्षा 10 और 12 में लड़कियों को कार्यक्रम के साथ कम सत्र आयोजित किये जाएं जिससे कि वे अपनी शैक्षणिक प्राथमिकताओं को पूरा करने पर केंद्रित रहें।

- **प्रधानाचार्यों के साथ एक मजबूत और नियमित जुड़ाव की कार्यनीति विकसित करना और लागू करना:** स्कूल–आधारित किशोरियों के कार्यक्रम के लिए, प्लान–इट गर्ल्स के अनुभव और सबसे अच्छे प्रथाओं के आधार पर, यह सुझाव दिया जाता है कि कार्यक्रम प्रधानाचार्यों और शिक्षक तक कार्यक्रम शुरुआत से जुड़ाव बनाये। जबकि कार्यक्रम ने राज्य सरकारों से औपचारिक अनुमति प्राप्त की थी और जिला अधिकारियों के साथ मिलकर काम किया था, कार्यक्रम के सहयोग और सुचारू रूप से चलने और कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए स्कूल प्रशासन के साथ काम करना जरुरी था। शुरुआत से, प्रधानाचार्यों के साथ स्कूलों में कार्यक्रम के बारे में बैठकें आयोजित की गईं और उसके बाद कार्यनीति के एक भाग के रूप में मासिक बैठकें और जिला प्रशासन के साथ त्रैमासिक बैठकें आयोजित की गईं। इससे स्कूल के अधिकारियों की कार्यक्रम से अपेक्षाओं को समझने में मदद मिली और उनके साथ नियमित अपडेट साझा करने और नियमित रूप से उनके इनपुट मांगने में भी मदद मिली। स्कूल प्रशासन के साथ व्यवस्थित और लगातार जुड़ाव ने कार्यक्रम के लिए निरंतर सहयोग सुनिश्चित करने के लिए लगभग सभी स्कूलों के साथ एक मजबूत संबंध बनाने में मदद की।

- **स्कूलों में कार्यक्रम के चेहरे के रूप में YFs के लिए जगह बनाना:** चूंकि YFs कार्यक्रम की नींव थे और लड़कियों और लड़कों के साथ स्कूल में पाठ्यक्रम का संचालन करते थे और स्कूल के टाइम टेबल के लिए शिक्षकों के साथ तालमेल स्थापित करते थे, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण था कि YFs को स्कूलों और समुदायों द्वारा कार्यक्रम के चेहरे के रूप में स्वीकार किया जाए। इस प्रकार, उन्हें टीम द्वारा अभिमुखीकरण के दौरान कार्यक्रम के केंद्र के रूप में पेश किया गया था और उन्हें स्कूल अधिकारियों के साथ समय–समय पर बैठकों के तालमेल और आयोजन की जिम्मेदारी दी गई थी। उन्होंने शिक्षकों और प्रधानाचार्यों को नियमित अपडेट भी प्रदान किया। स्कूल के भीतर YFs की मजबूत स्थिति और छात्रों के साथ उनके अच्छे तालमेल ने भी कक्षा और समुदाय के भीतर लड़कियों के लिए स्थानीय रोल मॉडल के रूप में उनकी स्थिति को मजबूत करने में मदद की। इसलिए यह सुझाव दिया जाता है कि एक सहकर्मी शिक्षक मॉडल के साथ एक स्कूल–आधारित कार्यक्रम में, सहकर्मी शिक्षकों को कार्यक्रम के प्रारूप के केंद्र में रखा जाता है और स्कूलों में कार्यक्रम के चेहरे के रूप में तैनात किया जाता है, जिससे समुदाय के भीतर विश्वसनीयता भी बढ़ती है।

- **स्कूल की समय सरणी में लचीलापन और पुनर्समायोजन:** जबकि कार्यक्रम को स्कूलों की शैक्षणिक समय सारिणी के भीतर एकीकृत किया गया था, इस धरातल पर अनापेक्षित और अप्रत्याशित स्तिथियों में तत्काल परिवर्तन और पुनर्गणना की आवश्यकता थी। इसलिए स्कूल की समय सारिणी में लचीलेपन और पुनर्समायोजन की अनुमति देते हुए स्कूल के कार्यान्वयन की योजना बनायी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, दिल्ली में कार्यक्रम के दूसरे वर्ष में, कक्षा 10 और 12 के लिए प्री–बोर्ड समय से एक महीने पहले आयोजित किए गए थे, जिसका अर्थ था कि प्लान–इट गर्ल्स के सत्रों को फिर से प्रारूपित किया जाना था और सुचारू रूप से यह सुनिश्चित करना था की कार्यक्रम सही समय पर पूरा हो जाए। इसी तरह, कुछ ऐसे अचानक कार्य और वार्षिक दिवस, पिकनिक, खेल दिवस, चुनाव ड्यूटी आदि के लिए छुट्टियों के कारण अक्सर स्कूलों में सत्र प्लान को फिर से तैयार करना पड़ता था। इसलिए स्कूल–आधारित कार्यक्रमों को स्कूलों की जरूरतें और मांगों के पुनर्समायोजन के लिए जगह रखें।

- **कार्यक्रम की शुरुआत से ही उद्योगों को जोड़ना:** जबकि, प्लान–इट गर्ल्स में, स्कूलों में कार्यक्रम के अंत में करियर मेलों की योजना बनाई गई थी, बेहतर होगा कि कार्यक्रम के आरमभ से ही औद्योगिक जुड़ाव

पर काम किया जाये। जबकि लड़कियों ने पाठ्यक्रम से रोजगार योग्यता कौशल सीखा, कार्यक्रम के अंत में उन्हें केवल उद्योग भागीदारों के संपर्क में लाया गया। उद्योग भागीदारों के साथ निरंतर जुड़ाव लड़कियों को अपने भविष्य के करियर विकल्पों के बारे में निर्णय लेने और योजना बनाने के लिए अधिक समय और विकल्प प्रदान करेगा। इसलिए कार्यक्रम को शुरुआत से ही उद्योगों के साथ संबंध और भागीदारी बनाने की आवश्यकता होगी। निरंतर जुड़ाव में लड़कियों के लिए मेंटरशिप, वित्तीय सहायता और अप्रेन्टिसशिप भी शामिल हो सकती है।

स्कूल में किशोरियां (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

झारखंड में शिक्षकों का प्रशिक्षण

तर्काधार

कार्यक्रम के प्रमुख भागों में से एक है शिक्षकों के साथ जुड़ाव जो कि एक लड़की के जीवन में महत्वपूर्ण हितधारकों में से एक है जो उसकी आकांक्षाओं और महत्वाकांक्षाओं का सहयोग करते हैं। इसका उद्देश्य प्रेरित शिक्षकों का एक नेटवर्क बनाना था जो कार्यक्रम का समर्थन करते हैं और स्कूल प्रणाली में जेंडर चौंपियन और चेंज एजेंट बनते हैं। दिल्ली में, शिक्षक जुड़ाव का नेतृत्व प्रवाह ने किया।[15] यह उम्मीद की गई थी कि दिल्ली की कार्यनीति झारखंड की कार्यनीति तैयार करने के लिए प्रेरित करेगी, जो स्थानीय संदर्भ पर आधारित थी। दिल्ली के विपरीत, झारखंड के अधिकांश स्कूलों में, शिक्षकों की कमी और जेंडर संवेदीकरण जैसे मुद्दों पर शिक्षकों के प्रशिक्षण के अभाव को कार्यनीति के लिए विचार करने की आवश्यकता थी। जिला स्तर के अधिकारियों और प्रधानाचार्यों के परामर्श से, प्रत्येक जुड़े स्कूल से दो 'चौंपियन शिक्षकों' को कार्यक्रम अवधि के दौरान कार्यशालाओं की एक श्रृंखला में भाग लेने के लिए नामित किया गया था।

कार्यनीति और प्रक्रिया

कार्यक्रम ने दो दिवसीय तीन कार्यशालाओं की योजना बनाई, जिसमें किशोरों के मुद्दे और जेंडर पर शिक्षकों के नजरिये के निर्माण के साथ–साथ उन्हें कौशल और सामग्री से लैस किया, जिसका उपयोग वे अपने छात्रों को सशक्त बनाने के लिए जारी रख सकें और उन्हें रोजगार के योग्य बना सकें। पहली जिला स्तरीय शिक्षक कार्यशाला में किशोरों के लिए शिक्षकों को संवेदनशील बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया, उसके बाद एक जेंडर परिप्रेक्ष्य निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया और सुरक्षित जगह बनाने और उन्हें पाठ्यक्रम सामग्री और गतिविधियों से परिचित कराने पर तीसरी और आखिरी कार्यशाला के साथ समापन हुआ।

कार्यक्रम के दौरान जिला शिक्षा अधिकारी (DEO) के सहयोग से पाकुड़ में जिला स्तर पर कुल मिलाकर तीन संवेदीकरण कार्यशालाएं आयोजित की गईं। चूंकि पाकुड़ के DEO ने महसूस किया कि कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (KGBVs – लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालय) के साथ काम करने की आवश्यकता है, इसलिए KGBV स्कूलों के शिक्षकों को भी जिला स्तरीय कार्यशाला में शामिल किया गया था। प्रत्येक कार्यशाला में कार्यक्रम से जुड़े स्कूलों और KGBV स्कूलों के कुल मिलाकर 15–20 महिला और पुरुष शिक्षकों ने भाग लिया। पाकुड़ के विपरीत देवघर में निवर्तमान DEO के सहयोग से टीम ने पहली कार्यशाला का संचालन किया, लेकिन DEO की अनुपस्थिति में शेष कार्यशालाओं का आयोजन नहीं किया जा सका.

कार्यशाला की रूपरेखा में पेस और जेम्स पाठ्यक्रम से सत्रों को शामिल किया गया था, जिसमें छात्रों के साथ शुरू किए गए सत्रों पर शिक्षकों को अवगत कराने की सोच थी ताकि वे भविष्य में अपने छात्रों के साथ इसी तरह के सत्र आयोजित करना जारी रख सकें।

कार्यशाला परस्पर संवादात्मक और सहभागी सत्र की रूपरेखा पर आधारित थी। कार्यशाला के अंतर्गत किशोरों को समझने, उनकी अपेक्षाओं, सपनों और आकांक्षाओं, शिक्षकों से उनके द्वारा अपेक्षित सहयोग और किशोरों के ज्ञान, दृष्टिकोण और प्रथाओं को आकार देने में शिक्षकों की भूमिका जैसे विषयों को शामिल किया गया। चर्चा के विषयों में यह भी शामिल था कि एक आदर्श छात्र और एक आदर्श शिक्षक कैसे बनते है, शिक्षकों की भूमिका, किशोरों की जरूरतें और चुनौतियाँ और स्कूल और शिक्षक एक सहायता प्रणाली के रूप में कैसे कार्य कर सकते हैं, क्योंकि अधिकांश किशोरियां उनके परिवारों में पहली पीढ़ी की शिक्षार्थी थीं। उन्होंने उन विशेषताओं को भी सूचीबद्ध किया जो एक शिक्षक के रूप में होनी चाहिए ताकि छात्रों को बेहतर तरीके से सहायता मिल सके। शिक्षकों को प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम और उनके स्वरूप में विभिन्न साझेदारों के साथ

15 दिल्ली में शिक्षक जुड़ाव की कार्यनीति प्रवाह द्वारा लागू की गई थी। पहले शैक्षणिक वर्ष में कार्यक्रम ने संभावित जेंडर चौंपियन की पहचान करने और उनकी क्षमता का निर्माण करने के उद्देश्य से कक्षा 9 से 12 तक पढ़ाने वाले प्रत्येक स्कूल के 10–15 शिक्षकों के साथ मासिक बैठकें आयोजित करने पर ध्यान केंद्रित किया। दूसरे वर्ष में, प्रति स्कूल में तीन–पांच शिक्षकों के साथ मासिक बैठकें आयोजित की गईं, जिनकी पहचान जेंडर चौंपियन के रूप में की गई थी। शिक्षकों ने अपने–अपने स्कूलों में कार्य परियोजनाओं का नेतृत्व किया जैसे कि शैक्षणिक पाठ्यपुस्तकों का जेंडर ऑडिट करना और स्कूल में जेंडर बोर्ड बनाना। अधिक जानकारी के लिए प्रक्रिया दस्तावेज– प्लान–इट शिक्षक हस्तक्षेप प्रवाह द्वारा देखें।

काम करके किशोरियों को सशक्त बनाने के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी गई। लड़कियों के लिए सूचना के प्रमुख स्रोतों, उनकी चुनौतियों, आत्म–सम्मान, करियर लक्ष्यों और शिक्षकों और परिवार से प्राप्त समर्थन पर प्रकाश डालने वाली बेसलाइन रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्षों को भी प्रतिभागियों के साथ साझा किया गया।

झारखंड में जिला स्तरीय शिक्षक कार्यशालाओं और बैठकों के माध्यम से शिक्षकों के साथ नियमित जुड़ाव ने शिक्षकों को कार्यक्रम के महत्व को समझने में मदद की, खासकर झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों के लिए। अधिकांश प्रधानाचार्यों और शिक्षकों ने कार्यक्रम पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। उन्होंने छात्रों को नियमित रूप से सत्र में भाग लेने के लिए प्रेरित किया और उन्हें करियर मेलों का हिस्सा बनने के लिए प्रोत्साहित किया। शिक्षकों ने करियर मेले की पहल की प्रशंसा की और इसे प्रथम अवसर के रूप में पहचाना जहां छात्रों को व्यावसायिक रूप से लगाए गए और प्रबंधित स्टालों के माध्यम से विभिन्न करियर के अवसरों से अवगत कराया गया। ज्यादातर शिक्षकों ने कार्यक्रम लागू करने के दौरान कार्यशालाओं और समग्र जुड़ाव का हिस्सा बनकर अपनी सार्थक और मूल्यवान यात्रा को पहचाना और जो सीखा उसे अपने स्कूलों में साझा किया। कई शिक्षकों ने किशोरियों को स्कूल स्तर की गतिविधियों और कार्यक्रमों के आयोजन और भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने की सूचना दी, करियर के अवसरों पर चर्चा की और जानकारी प्रदान की, और शैक्षणिक और गैर–शैक्षणिक गतिविधियों के लिए लड़कियों को अधिक सहयोग दिया।

चुनौतियां और निपटने की कार्यनीतियां

चुनौतियां	निपटने की कार्यनीतियां
कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए औपचारिक अनुमति के बावजूद, प्रधानाचार्य शिक्षकों के दो दिवसीय कार्यशाला में जाने के लिए तैयार नहीं थे।	प्रासंगिक स्कूल प्रशासन के साथ निरंतर और परस्पर संवाद ने इस प्रक्रिया को सुगम बनाया।
कार्यशालाओं के माध्यम से शिक्षकों को शामिल करना चुनौतीपूर्ण था – यदि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाओं में भाग लेते हैं तो एक या दो शिक्षकों के नेतृत्व वाले या संचालित होने वाले छोटे स्कूल बंद हो जाएंगे। इसलिए जिला प्रशासन शिक्षकों को कार्यशाला में भाग लेने की अनुमति देने से हिचक रहा था।	टीम ने सप्ताहांत सहित स्कूल की छुट्टियों के दौरान कार्यशालाओं का आयोजन करके इस चुनौती का समाधान किया। एक और कार्यनीति जिसने इस संबंध में अच्छी तरह से काम किया, वह थी कार्यशाला की सीख का सह–निर्माण करना ताकि शिक्षक स्वयं कार्यशालाओं में सक्रिय भागीदार हों। शिक्षकों को भी छात्रों के साथ आयोजित सत्रों का हिस्सा बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया ताकि वे कार्यक्रम की सामग्री से खुद को परिचित कर सकें और पाठ्यक्रम के प्रभाव को प्रत्यक्ष रूप से देख सकें।
विशेष रूप से देवघर में, शिक्षकों ने कार्यशाला के स्थान पर लंबी दुरी तय करके आने के कारण प्रशिक्षण में भाग लेने में हिचकिचाहट और सक्रिय रुचि की कमी व्यक्त की।	टीम ने शिक्षकों को यात्रा सहायता प्रदान करके इस चुनौती को कम किया। ऐसी यात्रा सहायता पाकुड़ में भी प्रदान की गई थी।

सीख और अनुशंसा

झारखंड में शिक्षकों के साथ जुड़ाव की कार्यनीति उन स्कूलों के शिक्षकों के साथ परामर्श के आधार पर तैयार की गई थी जहां कार्यक्रम लागू किया जा रहा था। यह सुझाव दिया जाता है कि 'शिक्षक कार्यशाला' को शिक्षकों की आवश्यकताओं के आधार पर तैयार किया जाए और इसे कार्यक्रम के उद्देश्यों से जोड़ा जाए। शिक्षकों के जुड़ाव को कार्यक्रम की रूपरेखा शुरुआत से शामिल किया जाना चाहिए और अनुभवात्मक शिक्षण के सिद्धांतों का पालन करते हुए नियमित बैठकों और कार्यशालाओं के माध्यम से परस्पर संवाद बनाये रखना चाहिए।

प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम द्वारा आयोजित शिक्षकों की कार्यशाला में भाग लेते शिक्षक (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

शिक्षकों के विचार

"हम देखते थे कि जब ये सत्र होते थे, तो उपस्थिति बेहतर होती थी और YFs ने बहुत अच्छा काम किया था। लड़कियों की झिझक धीरे–धीरे दूर होती जा रही थी।" – महिला शिक्षिका, पाकुड़, झारखंड

"अच्छा होगा यदि यह (पाठ्यक्रम) स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा बन जाए तो यह बेहतर परिणाम देगा। इससे लोगों की मानसिकता में बदलाव आएगा और हमें बेहतर परिणाम मिलेंगे।" – पुरुष शिक्षक, पाकुड़, झारखंड

"छात्रों ने शिक्षा और नौकरी पाने में रुचि दिखाना शुरू कर दिया है, यह लड़के और लड़कियों दोनों में देखा गया था। वे एक–दूसरे के करीब आने लगे हैं और एक–दूसरे से बात करने लगे हैं। अगर कोई खेल आयोजन होता तो ज्यादातर लड़के और लड़कियां असहज महसूस करते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है, वे सब एक साथ खेलते हैं।" – पुरुष शिक्षक, देवघर, झारखंड

युवा संसाधन केंद्र

तर्काधार

युवा संसाधन केंद्र (YRCs) को एक सामुदायिक संसाधन बनाने की योजना बनाई गई थी जो कार्यक्रम के साथ–साथ युवाओं के लिए एक सुरक्षित स्थान दे सके और सामुदायिक जुड़ाव में मदद कर सके। चूंकि कार्यक्रम में लड़कों, शिक्षकों, माताओं और समुदाय के सदस्यों सहित एक लड़की के परिवेश में सभी साझेदारों के साथ जुड़ने की योजना बनाई गई थी, इसलिए प्रमुख कार्यक्रम स्थलों पर YRCs स्थापित करने के लिए एक कार्यनीति का निर्णय लिया गया था – दिल्ली में एक YRC और झारखंड के दो जिले में एक–एक YRC पाकुड़ और देवघर में। YRC का उद्देश्य कार्यक्रम के प्रतिभागियों सहित समुदाय के युवाओं के लिए स्कूल के बाहर एक मिलते रहने के लिए एक संसाधन और गतिविधि केंद्र बनाना था। इसके अलावा, यह YFs के लिए कार्यालय भी बन गया। YFs के नेतृत्व और प्रबंधन ने YFs और समुदाय के लोगों, विशेष रूप से किशोर और किशोरियों के लिए साथियों से चर्चा, सलाह और समर्थन, कौशल सीखने और संसाधनों (जैसे कि इंटरनेट, प्रिंटर और कंप्यूटर) तक पहुंचने के लिए सुरक्षित स्थान बना। साथ ही YFs प्रशिक्षण, माताओं की बैठकों और महत्वपूर्ण दिवसों पर आयोजित कार्यक्रमों सहित अन्य गतिविधियां YRC पर आयोजित की गयीं।

युवा संसाधन केंद्रों की पहचान और स्थापना

दिल्ली और झारखंड दोनों में YFs को प्रारंभिक कार्यक्रम जिम्मेदारियों में से एक YRC के लिए सही जगहो की पहचान के साथ YRCs की स्थापना करना था। प्रत्येक YRC के लिए सही जगह को YF और PE द्वारा वरिष्ठ टीम और समुदाय के सदस्यों के सहयोग से सावधानी से पहचाना गया। चयनित जगह, समुदायों और चुने स्कूलों के नजदीक आराम से पहुंचने योग्य स्थान थे। सभी शॉर्टलिस्ट किए गए स्थानों का मूल्यांकन किया गया और इसमें शामिल लागतों और चुने स्कूलों से दूरी, साझेदारों के लिए पहुंच (केंद्रों में उनकी उपस्थिति को ज्यादा करने के लिए), स्वास्थ्य और सुरक्षाएं जोखिम कारकों, मुख्य और कच्ची सड़कों से पहुंच जैसे आवश्यक संकेतकों की मैपिंग के आधार पर अंतिम रूप दिया गया था और साथ–साथ केंद्रों को चलाने के लिए सरकारी अनुमति प्राप्त करने में आसानी। कार्यक्रम क्षेत्रों में कुल तीन YRCs स्थापित किए गए: एक बदरपुर, दिल्ली में, दूसरा झिकरहट्टी, पाकुड़ में और तीसरा चुलहिया, देवघर, झारखंड में। कई YFs ने इसे सीखने का अनुभव बताया क्योंकि उनमें से अधिकांश ने कभी इस तरह के कार्य नहीं किए थे।

युवा संसाधन केंद्रों के माध्यम से सुरक्षित स्थान बनाना

YRCs को दिल्ली और झारखंड में कार्यान्वयन स्थलों में सामरिक जगहों पर बनाया गया था और YFs और PEs द्वारा संचालन किया गया था। YRCs से कुछ अपेक्षित परिणामो हैं: कार्यक्रम से जुड़े लड़कों और लड़कियों के लिए सुरक्षित स्थान, स्कूल के बाद विभिन्न सेवाएं प्राप्त करना, जिसमें साथियों के दबाव संबंधों का प्रबंधन और संभावित करियर विकल्प पर YFs से अनौपचारिक परामर्श और मार्गदर्शन, शामिल हैं। चूंकि YFs लड़कियों और लड़कों के ही समुदायों और पृष्ठभूमि से आए थे और उन्हें कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षण मिला था, इसलिए उनके

युवा सहायक के विचार

"यह (YRC की स्थापना) एक बिल्कुल नया अनुभव था और हमें बिल्कुल नहीं पता था कि इसको कैसे करना है, लेकिन हम फिर भी सीखने में कामयाब रहे, इसको पार किया और इसे पूरा किया।" – महिला YF, दिल्ली

पास स्थानीय संदर्भों और उपलब्ध अवसर का ज्ञान था और लड़कियों तथा लड़कों का मार्गदर्शन करने की क्षमता थी। दिल्ली में, YRC का इस्तेमाल बैठकें, कार्यक्रम आयोजित करने और कार्यक्रम में भाग लेने वाले लड़कियों और लड़कों को कंप्यूटर की सुविधा प्रदान करने के लिए किया जाता था। YRCs में आयोजित कुछ कार्यक्रमों में अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस (11 अक्टूबर), राष्ट्रीय बालिका दिवस (24 जनवरी) और अंतराष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) पर थीम–आधारित चर्चा/बहस, चित्रकला प्रतियोगिताएं शामिल थीं। .

झारखंड में, YRCs ने उस समुदाय के साझेदारों के लिए जिन्होंने कार्यक्रम में भाग लिया था, एक नामित जगह के रूप में काम किया, जैसे कि फोटोकॉपी, ई–सेवाओं (प्रवेश परिणामों की जांच, नौकरी / रिक्तियों की खोज, रेल टिकट बुकिंग) और समाचार पत्र पढ़ने जैसी विभिन्न सेवाओं का लाभ उठाने के लिए।

दोनों कार्यक्रम स्थलों पर कार्यक्रम के लागू करने के दो वर्षों के दौरान, किशोर लड़कियों और लड़कों के समूह ने कंप्यूटर कक्षाओं, नौकरी के अवसरों को जानने, वित्तीय नियोजन और आस–पास के कौशल प्रशिक्षण केंद्रों के बारे में जानकारी लेने के लिए YRCs का दौरा किया।

चुनौतियां और निपटने की कार्यनीति

चुनौतियां	निपटने की कार्यनीतियां
YRCs को पहचानने और स्थापित करने में सबसे बड़ी चुनौती कार्यक्रम के लिए उपयुक्त जगह को खोजना था।	केंद्रों की स्थापना से पहले, YFs द्वारा YRC के लिए जरूरी मापदंडों की मैपिंग को शामिल करते हुए एक आवश्यकता मूल्यांकन प्रक्रिया आयोजित की गई थी। इनमें संभावित स्वास्थ्य और सुरक्षा जोखिम कारकों को ध्यान में रखते हुए, समुदाय के लिए सभी की पहुंच और चुने स्कूलों से निकटता शामिल थी। YFs और PEs ने प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए स्थानीय समुदाय के सदस्यों और अन्य NGO भागीदारों से समर्थन मांगा। उनके सुझावों और समर्थन ने दिल्ली, पाकुड़ और देवघर में तीन YRC केंद्रों को अंतिम रूप देने से पहले संभावित स्थानों और उपलब्ध जगहों की सूची को कम करने में मदद की।

सीख और अनुशंसा

कार्यक्रम के अनुभव के आधार पर, YRCs जैसे स्थानों में निवेश कार्यक्रम साझेदारों के लिए संसाधन और गतिविधि केंद्र के रूप में कार्य कर सकता है। YRCs जैसी जगह स्कूलों और समुदायों में साझेदारों के जुड़ाव के लिए कार्यक्रम को संचालित करने में मदद करते हैं। वे विभिन्न कार्यक्रम गतिविधियों के अलावा एक स्थायी जुड़ाव मॉडल की क्षमता प्रदान करते हैं और शहरी और ग्रामीण दोनों समुदायों के लड़कियों और लड़कों सहित प्रमुख कार्यक्रम साझेदारों की जरूरतों को पूरा करने के अवसर प्रदान करते हैं। युवा संसाधन केंद्रों ने एक सुरक्षित स्थान बनाया जो लड़कियों और लड़कों के लिए उनके रोजमर्रा के जीवन, लक्ष्यों, शिक्षा और कार्य आकांक्षाओं से संबंधित मुद्दों पर सलाह लेने, बातचीत करने और संलग्न करने के लिए आसानी से मौजूद था। इसने समुदाय के सदस्यों के भीतर कार्यक्रम को वैधता भी प्रदान की। YRC जैसे भौतिक बुनियादी ढांचे ने भी कार्यक्रम के लिए समुदाय के साथ विश्वास बनाने में मदद करी।

सामुदायिक जुड़ाव

तर्काधार

पारिस्थितिकी तंत्र मॉडल में कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्यों में से एक माता–पिता और समुदाय के जुड़ाव के माध्यम से किशोरी शिक्षा और रोजगार के लिए प्रतिरोध को कम करना और एक सहायक वातावरण बनाना था। एक लड़की के जीवन में, उसके माता–पिता और समुदाय के लोग अक्सर ऐसे लोग होते हैं जो उसके जीवन विकल्पों को निर्देशित, नियंत्रित या प्रभावित कर सकते हैं, विशेष रूप से भविष्य में उसकी शिक्षा, प्रशिक्षण और काम करने की मर्जी को लेकर। इसलिए, इन प्रमुख साझेदारों के साथ काम करना अनिवार्य है ताकि किशोरियों की जरूरतों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को बढ़ाया जा सके और जेंडर–समान दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जा सके जो लड़कियों के लिए एक अधिक अनुकूल वातावरण देने में मदद करेगा जहां वे समर्थित महसूस करती हैं और जानकारी पर आधारित भविष्य के विकल्प चुन सकती हैं।

सामुदायिक जुड़ाव कार्यनीति शहरी और ग्रामीण कार्यक्रम क्षेत्रों के अनोखे भौगोलिक और सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों को ध्यान में रखते हुए, विकसित करना जरूरी था। दिल्ली और झारखंड के गांवों में YFs ने एक व्यापक सामुदायिक मानचित्रण तैयार किया जिससे कार्यक्रम में भाग लेने वाली किशोरियों, सामुदायिक संसाधनों की उपलब्धता और अन्य कार्यक्रम एवं संस्थानों की उपस्थिति को समझने में मदद मिली। यह अभ्यास प्रत्येक स्थान के लिए तैयार की जाने वाली सामुदायिक सहभागिता कार्यनीतियों को खड़ा करने के लिए जरूरी था।

दिल्ली के लिए कार्यनीति

दिल्ली में सामुदायिक मानचित्रण अभ्यास ने कार्यक्रम में भाग लेने वाली लड़कियां कहाँ–कहाँ से आती हैं के बारे में आवश्यक जानकारी प्रदान की। दिल्ली में, जिन स्कूलों में कार्यक्रम चल रहा था वे 8 से 10 किलोमीटर के दायरे में फैले हुए थे, जो कक्षा 9 और 11 की 7,000 से अधिक लड़कियों तक पहुंच रहे थे। छात्र कई शहरी वार्डों में फैले हुए थे, जिनमें कई प्रकार के इलाके शामिल थे – पुनर्वास कॉलोनियां, स्लम कॉलोनियां जिन्हें जेजे कॉलोनियां के नाम से भी जाना जाता है और अन्य निम्न या मध्यम आय वाले इलाके। दिल्ली और हरियाणा की सीमा पर स्थित स्कूलों के कुछ छात्र फरीदाबाद से भी आए थे।

चूंकि लड़कियां एक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र से आती हैं, इसलिए लड़कियों के माता–पिता तक पहुंचने के लिए दिल्ली के लिए सामुदायिक कार्यनीति पर फिर से काम किया गया, हालांकि, जल्द ही यह महसूस किया गया कि अधिकांश पिता दिन के दौरान उपलब्ध नहीं थे। इस प्रकार, अभियान और कार्यक्रमों के माध्यम से समुदाय के सदस्यों तक पहुंचने को छोड़कर कार्यक्रम में भाग लेने वाली लड़कियों की माताओं के साथ मिलकर काम करने का निर्णय लिया गया।

कार्यान्वयन

किशोरियों की माताएँ कामकाजी और घरेलू महिलाएं दोनों ही थीं। मैपिंग और अलग–अलग इलाकों में कई माताओं के साथ व्यक्तिगत और समूह परामर्श के बाद, कम अवधि के जुड़ाव की योजना बनाने का निर्णय लिया गया। टीम ने माना कि प्रत्येक लड़की की मां तक पहुंचना संभव नहीं है। इसलिए, उन क्षेत्रों की पहचान की जाये जहाँ से कार्यक्रम में भाग लेने वाली लड़कियां ज़्यादातर आती हैं। YFs ने माताओं को जुटाने के लिए घर का दौरा किया और 25–30 माताओं के कई समूह बनाए। उन्होंने स्कूल प्रबंधन समितियों (SMCs)[16] के सदस्यों से भी सहयोग लिया, जिनको मासिक SMC बैठको में कार्यक्रम का अभिमुखीकरण कराया गया था। SMC सदस्यों ने भी समुदाय में माताओं को चुनने के लिए सहायता प्रदान की, हालांकि, SMC सदस्यों की भागीदारी में काफी भिन्नता थी, क्योंकि सभी SMC सदस्य सक्रिय रूप से माता–पिता के साथ नहीं जुड़े थे।

माताओं के साथ आठ सप्ताह के जुड़ाव की प्रारंभिक योजना के बाद, टीमों ने महसूस किया कि अधिकांश माताएँ पहली तीन से चार बैठकों के बाद बैठक में भाग नहीं लेती थीं। इस प्रकार, टीम ने प्रति समूह चार–सप्ताह की योजना के साथ काम

16 जब मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 (RTEAct) ने प्रत्येक सरकारी वित्त पोषित स्कूल में स्कूल प्रबंधन समितियों (SMC) के गठन को अनिवार्य कर दिया, तो यह समुदाय और विशेष रूप से माता–पिता की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए था। स्कूल प्रबंधन समिति (SMC) में माता–पिता, स्थानीय निर्वाचित प्रतिनिधि, शिक्षाविद शामिल होते हैं, और स्कूल के प्रमुख द्वारा आयोजित की जाती है।

करने का निर्णय लिया। इन चार हफ्तों में माताओं के साथ निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गईः

- सप्ताह 1 – बालिकाओं का महत्त्व
- सप्ताह 2 – लड़कियों के लिए शिक्षा और रोजगार का महत्व
- सप्ताह 3 – बाल विवाह, समय से पहले और जबरदस्ती विवाह
- सप्ताह 4 – लड़कियों की आकांक्षाएं – मां–बेटी के मध्य बातचीत

दिल्ली में यह कार्यक्रम कुल 2,198 माताओं तक पहुंचा। माताओं के साथ चर्चा ने उनके अपने अनुभवों और आदर्श जीवन जीने की इच्छा पर बहुत अधिक ध्यान दिया। इससे उन्हें अपनी बेटियों के समर्थन में आने वाली बाधाओं को पहचानने में मदद मिली। अंतिम सत्र में माताओं से अनुरोध किया गया कि वे अपनी बेटियों को साथ लाएं। इस अवसर का उपयोग बेटियों की आकांक्षाओं के बारे में दोनों के बीच बातचीत शुरू करने के लिए किया गया और उन्हें इस बात पर प्रकाश डालने में सक्षम बनाया गया कि बेटियों की आकांक्षाएं अपनी बेटियों के लिए माताओं की आकांक्षाओं से बहुत अलग हो सकती हैं। सत्र का समापन माताओं द्वारा उन तरीकों की पहचान के साथ हुआ जिससे वे अपनी बेटियों को उनके सपनों को साकार करने में सहायता कर सकती हैं।

इसके साथ ही माता–पिता तक पहुंचने के लिए अभिभावक शिक्षक बैठक (PTMs) जैसे अन्य प्लेटफॉर्म का भी लाभ उठाया गया। हालांकि अधिकांश स्कूलों में, 40–50 प्रतिशत से अधिक माता–पिता PTM में भाग नहीं लेते हैं, लेकिन इससे टीम को अधिक संख्या में अभिभावकों तक पहुंचने में मदद मिली। स्कूलों ने 15–20 मिनट के सत्र के लिए एक जगह देकर इस कार्यनीति का सहयोग किया जिसमें माता–पिता को कार्यक्रम से परिचित कराया गया और उनकी बेटियों की शिक्षा और रोजगार से संबंधित आकांक्षाओं का सहयोग करने में उनकी भूमिका पर एक छोटी चर्चा हुई। PTM के माध्यम से कुल 610 माताओं तक पहुंचा गया। इसके अलावा, कार्यक्रम के विषयगत फोकस से संबंधित विशेष दिन भी मनाए गए (अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस, आदि)। कुल मिलाकर, ऐसे पांच कार्यक्रम/दिन देखे गए और 50 सामुदायिक बैठकें आयोजित की गईं।

झारखंड के लिए कार्यनीति

झारखंड में, अधिकांश स्कूल ब्लॉक स्तर पर स्थित हैं और दो से तीन पंचायतों के गांवों तक पहुँचते हैं। यह सामुदायिक जुड़ाव कार्यनीति के लिए एक उलझन थी क्योंकि प्रत्येक स्कूल लगभग 50–60 गांवों के लिए था और प्रति गांव में लड़कियों की संख्या कम थी। इन गांवों में माता–पिता तक पहुंचना या माता–पिता समूहों को तैयार करना संभव नहीं था।

स्कूल में सुबह की असेंबली में किशोरियों की सहभागिता (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

झारखंड में, सामुदायिक जुड़ाव कार्यनीति, इसलिए सामुदायिक अभियानों और PRI संवेदीकरण पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है। जबकि शुरू में SMCs को भी कार्यनीति में शामिल करने का सोचा गया था, यह पाया गया कि SMCs बड़े पैमाने पर क्रियाशील नहीं थीं।

इस प्रकार, बड़े पैमाने पर समुदाय तक पहुंचने के लिए किशोरों के नेतृत्व वाले सामुदायिक अभियानों की योजना बनाई गई थी। टीम ने सामुदायिक आउटरीच के लिए मौजूदा ग्राम–स्तरीय संस्थानों और तंत्रों का लाभ उठाने का भी निर्णय लिया। टीम ने पाकुड़ और देवघर में पंचायतों और ग्राम पंचायत की बैठकों में ग्राम रोजगार सेवक (ग्राम–स्तरीय रोजगार कार्यकर्ता), मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता (ASHA) और स्वयं सहायता समूह (SHG) सदस्यों, को जोड़ा। सदस्यों को लड़कियों की आकांक्षाओं, उनके लिए अवसरों और उनकी क्षमता को साकार करने में माता–पिता और समुदायों की भूमिका के बारे में इन बैठकों में चर्चा की गई।

कार्यान्वयन

झारखंड में सामुदायिक जुड़ाव में PRI सदस्यों के साथ व्यक्तिगत और समूह बैठकें और कार्यक्रम में भाग लेने वाली लड़कियों और लड़कों के नेतृत्व में सामुदायिक अभियान शामिल थे। सामुदायिक साझेदारों के साथ जुड़ाव का उद्देश्य बाल विवाह में देरी के लिए उनके सहयोग का बढ़ाना और किशोरियों को अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए एक सहायक वातावरण बनाना है। इसका उद्देश्य समुदाय को अपनी लड़कियों को पढ़ने और काम करने के लिए सही स्थानीय विकल्प देना था।

पंचायत और समुदाय के सदस्यों के साथ जुड़ाव

पंचायतें भी कार्यक्रम के लिए संस्थागत समर्थन हासिल करने के प्रयास में लगी हुई थीं। चुने हुए स्कूल के क्षेत्र के अंतर्गत एक पंचायत की पहचान की गई और संवेदीकरण बैठकों के जरिए से लगातार जुड़ाव का लक्ष्य रखा गया। PRI सदस्यों के साथ व्यक्तिगत और समूह बैठकों की एक श्रृंखला के बाद, स्थानीय चाइल्डलाइन एजेंसी के सदस्य, कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्र, चयनित स्कूलों के शिक्षक, रोजगार मित्र, ASHA कार्यकर्ता और पंचायत अध्यक्ष PRI संवेदीकरण बैठकों में शामिल थे। इन बैठकों का उद्देश्य PRI सदस्यों को विभिन्न प्रावधानों के बारे में बताना था जो सरकारी नीतियों के एक भाग के रूप में मौजूद हैं और समुदाय में लड़कियों के लाभ के लिए उनका लाभ कैसे उठाया जा सकता है। बैठकें बाल विवाह निषेध अधिनियम, 2006 की अधिक बारीकी समझ बनाने पर भी केंद्रित थीं, क्योंकि झारखंड में बाल विवाह एक आम बात है। बाल विवाह, बाल संरक्षण, बालिका शिक्षा और जेंडर समानता पर 10 से अधिक PRI संवेदीकरण बैठकें आयोजित की गईं।

कार्यक्रम को समाप्त करने के लिए समुदायों में हुई आखरी बैठक में न केवल समुदाय के नेताओं और सदस्यों को बल्कि स्कूली शिक्षकों, झारखंड राज्य आजीविका संवर्धन सोसायटी के ब्लॉक स्तर के अधिकारियों, चाइल्डलाइन के सदस्यों, अन्य स्थानीय NGO भागीदारों और कौशल विकास भागीदारों को भी आमंत्रित किया गया था। यह स्थानीय स्तर पर लड़कियों की शिक्षा और रोजगार के अवसरों का सहयोग करने के वायदे के अनुसार था। चर्चा ने लड़कियों की शिक्षा और रोजगार के लिए महत्वपूर्ण बाधाओं की पहचान करने में मदद की, जिसके बाद शैक्षिक और कौशल प्राप्त करने के अवसरों और चाइल्डलाइन की बाल विवाह को रोकने रोकने में भूमिका पर चर्चा हुई। बैठक में सभी प्रतिभागियों ने मिलकर मुमकिन समाधानों की सूची बनाई और अपने समुदायों में उन कदमों को उठाने का संकल्प लिया। इससे न केवल समुदाय के सदस्यों के बीच समुदाय–स्तरीय जवाबदेही बनाने में मदद मिली, बल्कि ऐसी संस्थाओं के साथ सामुदायिक जुड़ाव बना जो कार्यक्रम के समाप्त होने के बाद आवश्यक सहायता प्रदान कर सकती थीं।

किशोर नेतृत्व वाले सामुदायिक अभियान

सामुदायिक अभियानों के लिए समर्थन जुटाने के लिए, YFs ने सामुदायिक साझेदारों – पंचायत सदस्यों, ASHAs, रोजगार मित्र और किशोरियों के माता–पिता से संपर्क किया और उनसे लड़कियों को नियमित रूप से स्कूलों में भेजने और उन्हें गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति देने का अनुरोध किया। लड़कियों और लड़कों को बातचीत और सहयोग करने का अवसर प्रदान करने के लिए कई स्कूल–आधारित प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। इसने दो विषयों – लड़कियों के लिए शिक्षा और बाल विवाह – पर अभियान चलाने के लिए अपने समुदायों में कार्यक्रम के प्रतिभागियों को जुटाने के लिए एक आधार तैयार हुआ। किशोरों के नेतृत्व वाले अभियानों में घर घर अभियान, रैलियां, महत्वपूर्ण दिनों को मनाना और समुदाय में बातचीत में भागीदारी शामिल थे। इन अभियानों ने लड़कियों को समुदाय में गतिविधियों में भाग लेने का अवसर

प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम के दौरान आयोजित सामुदायिक अभियान का नेतृत्व करते किशोरियां और किशोर (फोटोः रेस्टलेस डेवलपमेंट)

दिया और सार्वजनिक स्थान पर उनकी उपस्थिति बढ़ी। अभियान SHG सदस्यों, पंचायत सदस्यों और कुछ अभिभावकों सहित समुदाय स्तर पर महत्वपूर्ण साझेदारों से सहयोग प्राप्त करने में अहम साबित हुए। बाल विवाह, बालिका शिक्षा और समुदाय में लड़कियों के मूल्य के मुद्दों पर व्यापक जागरूकता को बढ़ाने के लिए YRCs में और उसके आसपास अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस और अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस जैसे महत्वपूर्ण दिनों के उत्सव भी आयोजित किए गए थे।

झारखंड में, देवघर में कुल 117 गतिविधियां और बैठकें और पाकुड़ में 67 गतिविधियां और बैठकें लागू करने के दो वर्षों के दौरान सामुदायिक जुड़ाव के माध्यम से 18,000 से अधिक लोगों तक पहुंचे।

समुदाय की महिलाओं के विचार

"बाल विवाह हमारे क्षेत्रों में एक बढ़ती हुई चिंता है। हमारी पंचायत मुद्दों पर काम करने और समुदाय के सदस्यों को संवेदनशील बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। विभिन्न सामुदायिक अभियान और संवेदीकरण बैठकें वास्तव में हमारे समुदाय में माता–पिता और बड़ों के बीच जागरूकता पैदा करने में हमारी मदद कर रही हैं। मैं लड़कियों को रोजगार गतिविधियों से जोड़कर बाल विवाह के मुद्दे को हल करने के लिए हमारे समुदाय में चाइल्डलाइन और कौशल विकास भागीदारों के साथ बात–चीत को बढ़ावा देने के आज के प्रयासों की वास्तव में सराहना करती हूँ। यह हमें आगे काम करने के लिए और अधिक मार्गदर्शन प्रदान करेगा।" – महिला समुदाय सदस्य, मुखिया, खासपेका पंचायत, देवघर, झारखंड (पंचायत कार्यक्रम चुने हुए स्कूल, शशिभूषण रे. 2 स्कूल, सिमरा के सामुदायिक चुने हुए क्षेत्रों के अंतर्गत आती है)

"हिरनपुर हाई स्कूल के एक छात्र द्वारा बाल विवाह पर जागरूकता की दिशा में किया गया प्रयास एक अच्छी पहल है। इस तरह के अभियान होने चाहिए क्योंकि हमारे समाज में अभी भी बाल विवाह हो रहा है और हम सभी को इसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। मैं इस तरह की पहल का पूरा समर्थन करती हूँ।" – महिला समुदाय सदस्य, वार्ड सदस्य, कमलघाटी, हिरणपुर, झारखंड

"बाल विवाह पर इस तरह का अभियान वास्तव में आवश्यक है। लड़के और लड़कियों दोनों को अपनी शादी के बारे में फैसला करने का अधिकार होना चाहिए।" – महिला समुदाय सदस्य, मुखिया, झिकरहट्टी, पाकुड़, झारखंड

सामुदायिक अभियान में भाग लेती किशोरियां (फोटोः रेस्टलेस डेवलपमेंट)

चुनौतियां और निपटने की कार्यनीति

चुनौतियां	निपटने की कार्यनीतियां
दिल्ली के स्कूल जैसे व्यापक समुदायों वाले जगह में एक मजबूत सामुदायिक जुड़ाव कार्यनीति तैयार करना चुनौतीपूर्ण साबित हुआ	इस चुनौती को समझने और कम करने के लिए, चुने हुए क्षेत्र में कार्यक्रम प्रतिभागियों मानचित्र तैयार किया गया। इस के आधार पर, माता–पिता और SMC सदस्यों के साथ परामर्श पर सामुदायिक जुड़ाव कार्यनीति को संशोधित किया गया था। माता–पिता तक पहुंचने और कार्यक्रम के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए SMCs और PTMs के मौजूदा समूहों का लाभ उठाया गया। माताओं के समूहों का गठन और माताओं की समूह बैठकें आयोजित करना संशोधित कार्यनीति का एक मुख्य अंग था। जिन क्षेत्रों में समूह बनाना संभव नहीं है, वहां घरेलू दौरों के माध्यम से माताओं तक पहुँच बनायी गयी।
झारखंड में, प्रबल जेंडर मानदंडों के कारण PRI जुड़ाव में महिला समुदाय के नेताओं की भागीदारी कम थी (महिलाएं शुरू में पुरुष नेताओं के सामने बोलने से हिचकिचाती थीं।)	पहली बैठक में महिला नेताओं की कम भागीदारी को देखते हुए टीम ने सोच–समझकर कार्यनीति में बदलाव किया। एकीकृत बैठकों में, YFs ने महिला नेताओं से प्रतिक्रिया शामिल करने के लिए अच्छा प्रयास किया। महिला नेताओं को भी छोटे समूहों में बोलने और भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

अनुशंसा

चूंकि पारिस्थितिकी तंत्रदृष्टिकोण लड़कियों के समर्थन के लिए घर और समुदाय में एक अनुकूल परस्थिति बनाने की संरचना करता है, इसलिए एक संरचित और बहुस्तरीय दृष्टिकोण होना आवश्यक है। (लड़कियों की आकांक्षाओं के प्रति समुदाय की संवेदनशीलता को बढ़ाना और) किसी भी संभावित प्रतिक्रिया के जोखिम को कम करना। कार्यक्रम के अनुभव के आधार पर, यह सुझाव दिया जाता है कि स्थानीय–भौगोलिक और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए सामुदायिक जुड़ाव कार्यनीति तैयार की जाए और आवश्यकतानुसार उसमें बदलाव किया जाए। झारखंड की तरह बहुस्तरीय कार्यनीति जो PRI संवेदीकरण बैठकों और किशोर नेतृत्व वाले सामुदायिक अभियानों भी प्रयोग किया जा सकता है। यह भी अनुशंसा की जाती है कि सामुदायिक जुड़ाव कार्यनीति में अन्य स्थानीय CSOs/NGOs सरकारी अधिकारियों के साथ साझेदारी करके बड़े पैमाने पर अभियान चलाने के लिए सरकारी कार्यक्रमों और नीतियों का लाभ उठाकर एक सहयोगी दृष्टिकोण का उपयोग किया जाये।

प्लान–इट गर्ल्स की निरंतरता और बड़े पैमाने पर कार्यक्रम का कार्यान्वयन

कार्यक्रम की निरंतरता

प्लान–इट गर्ल्स को किशोरियों के सशक्तिकरण और रोजगार योग्यता के लिए एक बहु–स्तरीय और बहु–साझेदारी एकीकृत मॉडल का जांच करने के लिए संरचना और क्रियान्वयन किया गया। स्कूलों में कार्यक्रम के बाद और 2019 की शुरुआत में, अंतिम मूल्यांकन, टीम ने उन लड़कियों को सहयोग करने की आवश्यकता को पहचाना, जो स्कूल से निकलने वाली थीं, विशेष रूप से स्थानीय स्तर पर उपलब्ध शिक्षा, प्रशिक्षण और करियर के अवसरों के साथ जुड़ाव सुनिश्चित करने के लिए। इस सेक्शन में, हम कुछ प्रमुख कार्यों पर प्रकाश डालते हैं जो स्कूलों में कार्यक्रम के पूरा होने के बाद छह महीने से अधिक समय तक कार्यक्रम के प्रभाव की निरंतरता को बनाए रखने के लिए शुरू की गई थीं।

दिल्ली

जिन लड़कियों ने कार्यक्रम में भाग लिया था, वे अपनी बोर्ड परीक्षा में शामिल हुई थीं और वे या तो स्कूल में स्नातक होने या कक्षा 11 में जाने के कगार पर थीं, जहां वे उस विषय के बारे में फैसला करेंगी, जिसे वे आगे पढ़ना चाहती हैं। कुछ के लिए, यह भी तय नहीं था कि क्या उन्हें उनके परिवारों द्वारा अपनी पढ़ाई जारी रखने की अनुमति दी जाएगी। ऐसे स्थिति में, टीम ने लड़कियों को उनके परिवारों तक पहुंचकर और उनकी शिक्षा जारी रखने के लिए माता–पिता/अभिभावकों के साथ बातचीत शुरू करके सहायता प्रदान करने का निर्णय लिया। YFs ने गर्मी की छुट्टियों के दौरान घर–घर जाकर लड़कियों को अपनी शिक्षा जारी रखने या उच्च शिक्षा या प्रशिक्षण विकल्पों को चुनने में सक्षम बनाने के बारे में चर्चा की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य लड़कियों को समुदाय में उपलब्ध अवसरों से जोड़ना था, जो कौशल प्रशिक्षण केंद्र और करियर के अवसर स्थानीय परिपेक्ष में मौजूद थे। इस समय के दौरान, कार्यक्रम का फोकस लड़कियों की प्राथमिकताओं को समझना, उनकी आकांक्षाओं का खाका तैयार करना और उनके माता–पिता के साथ मिलकर उनकी सहमति और समर्थन प्राप्त करना था जिसके अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियां कीं:

- समुदाय में उन लड़कियों की पहचान करना जिन्होंने कक्षा 12 पास कर ली थी और कार्यक्रम में भाग लिया था
- चिन्हित की गई लड़कियों के साथ आकांक्षा मानचित्रण अभ्यास आयोजित करना।
- लड़कियों को स्थानीय रूप से उपलब्ध नौकरी से जुड़े प्रशिक्षण और नौकरी के अवसरों के बारे में जानकारी प्रदान करके उनके बीच सूचना की कमी को कम करनाय
- लड़कियों को जानकारी के आधार पर करियर विकल्प चुनने में समर्थन/सहायता प्रदान करना और उन्हें चुनिंदा पाठ्यक्रमों में दाखिला लेने में मदद करना
- लड़कियों के लिए प्रशिक्षण/नौकरी के अवसर प्रदान करने के लिए स्थानीय रूप से देखी गई एजेंसिया/संस्थानों के साथ नेटवर्क और संबंध बनाना
- नौकरी को लेकर पाठ्यक्रम/प्रशिक्षण पूरा करने के लिए लड़कियों के साथ नियमित फॉलो–अप करना।

पहल की मुख्य विशेषताएं

- प्लान–इट गर्ल्स कार्यक्रम में भाग लेने वाली दक्षिण पूर्वी दिल्ली में 900 से अधिक लड़कियों को संगठित कर और परामर्श दिया गया
- 321 से अधिक लड़कियों की इच्छाओं का खाका तैयार किया और 600 से अधिक माता–पिता (200 पिता और 400 माताओं सहित) को परामर्श दिया गया
- 400 से अधिक लड़कियों के साथ पेस पाठ्यक्रम से रोजगार योग्यता कौशल पर पुनरावृति सत्र आयोजित किये गए
- NSDC स्वीकृत निजी कौशल प्रशिक्षण केंद्र (केंद्रों) में 300 लड़कियों के नामांकन में सहायता करना और प्रशिक्षण पूरा करने में उनका समर्थन किया।

"स्कूल टू स्किल" की पहल के माध्यम से टीम ने कई तरह से सूचना की कमी को दूर किया, खासकर तब जब बहुत सारी लड़कियों को यह भी स्पष्ट नहीं हो कि कौन सा कोर्स चुनना है। इस पहल ने महिलाओं के कौशल विकास से संबंधित सरकारी सुविधाओं तक पहुँचने के लिए विभिन्न तौर–तरीकों के बारे में लड़कियों की समझ बनाने में मदद की।

झारखंड के स्कूल में कक्षा सत्र में उपस्थित सहभागी किशोरियां (फोटोः केतकी नागराजू/आईसीआरडब्ल्यू एशिया)

झारखंड

इसी तरह, झारखंड में YFs ने गर्मी की छुट्टियों के दौरान घर–घर जाकर लड़कियों को अपनी शिक्षा जारी रखने या उच्च शिक्षा के विकल्पों को चुनने के बारे में चर्चा की और जो असफल हो गए थे, उन्हें कंपार्टमेंट परीक्षा के लिए फॉर्म भरने में मदद की। स्कूलों को फिर से खुलने के बाद, टीम ने लड़कियों को समर्थन देना जारी रखा और झारखंड में 49 समुदायों में लगभग 350 से अधिक लड़कियों और 170 अभिभावकों तक पहुंच बनाई।

दोनों जिलों में YFs ने कार्यक्रम में भाग लेने वाली लड़कियों से संपर्क किया। जबकि कुछ लड़कियों को अपनी पढ़ाई जारी रखने के बारे में जानकारी प्राप्त करने में दिलचस्पी थी, जो सफलतापूर्वक परीक्षा पास नहीं कर सकीं उन्हें पढ़ाई जारी रखने के लिए मनाना पड़ा। YFs ने उन्हें कंपार्टमेंट परीक्षा के लिए फॉर्म भरने की प्रक्रिया को समझने में मदद की और उन्हें स्कूल में फिर से नामांकन लेने में मदद की।[17] लड़कियों को विभिन्न मौजूदा उच्च शिक्षा विकल्पों के बारे में सटीक जानकारी प्रदान करने के लिए, YFs ने प्रवेश प्रक्रियाओं के बारे में सभी जरुरी जानकारी एकत्र करने के लिए स्कूलों और कॉलेजों से भी संपर्क किया। सभी सूचनाओं को रोजगार क्षमता डॉकेट के रूप में इकठ्ठा किया गया है जिसका इस्तेमाल शिक्षकों और छात्रों द्वारा विस्तृत रेफेरेंस गाइड के रूप में किया जा सकता है।

किशोरियों के विचार

"हां, दो–तीन साल पहले मेरी किसी से बात करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन अब मैं सभी के साथ बातचीत कर रही हूं और अनजान लोगों से भी बातचीत कर रही हूं और समझ रही हूं कि क्या हो रहा है। पहले मेरी दुनिया बहुत छोटी थी लेकिन अब मेरी दुनिया बड़ी हो गई है।" – बड़ी उम्र की किशोरी, पाकुड़, झारखंड

"मुझे पता है कि मुझे ग्रेजुएशन के लिए कॉमर्स लेना है और साथ ही बैंक परीक्षा की तैयारी करनी है। अगर मैं वह परीक्षा पास कर लेती हूं तो मुझे बैंक मैनेजर के रूप में चुना जा सकता है।" – छोटी उम्र की किशोरी, दिल्ली

"वे हमें करियर और शिक्षा के बारे में मार्गदर्शन करते हैं। इसलिए, मैंने महसूस किया कि उन्हें नौकरी के बारे में सब कुछ बताना चाहिए, केंद्रों के बारे में और पेश किए जाने वाले पाठ्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया जाना चाहिए, ताकि लोग बेकार न बैठें और कुछ करें।" – बड़ी उम्र की किशोरी, दिल्ली

17 कम्पार्टमेंट परीक्षा उन छात्रों के लिए है जो बोर्ड परीक्षा में पांच मुख्य विषयों में से एक में अनुत्तीर्ण हो गए हैं। कम्पार्टमेंट परीक्षा एक शैक्षणिक वर्ष को फिर से दोहराए बिना परीक्षा के लिए फिर से उपस्थित होने का विकल्प है।

इसके साथ ही, कार्यक्रम ने रोज़गार क्षमता डॉकेट[18] को भी साझा किया जिसे स्थानीय रूप से उपलब्ध उच्च शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसरों पर विस्तृत जानकारी देने के लिए तैयार किया गया था। इसे स्कूलों के साथ साझा किया गया था, साथ ही शिक्षकों को उनके दिन–प्रतिदिन के शिक्षण में उनका सहयोग करने जेंडर–उत्तरदायी कक्षाएँ बनाने के लिए एक रेफेरेंस गाइड भी साझा की गयी।[19]

आगे का रास्ता: बड़े पैमाने पर कार्यक्रम के कार्यान्वयन के अवसर

प्लान–इट गर्ल्स किशोरियों के सशक्तिकरण और रोजगार योग्यता के लिए एक बहु–स्तरीय और बहु–साझेदार एकीकृत मॉडल का क्रियान्वयन किया गया। जबकि कार्यक्रम के मूल्यांकन ने प्लान–इट गर्ल्स के प्रभाव को स्थापित किया, भविष्य में बड़े पैमाने पर कार्यक्रम के कार्यान्वयन की क्षमता का आकलन करना भी जरूरी है।

बड़े पैमाने पर कार्यक्रम के कार्यान्वयन की योजना बनाने की संभावित कार्यनीति में कार्यक्रम टीम और प्रतिभागियों के इनपुट के आधार पर कार्यक्रम स्केलेबिलिटी मूल्यांकन ढांचा (अनुलग्नक) तैयार करना शामिल हो सकता है। इसमें शामिल होंगे। (कार्य का विकास और मूल्यांकन करने वाले शोधकर्ता, लागू करने वाले भागीदार, और कार्यक्रम के प्रतिभागियों के साथ–साथ पारिस्थितिकी तंत्र (किशोरों, समुदायों और स्कूल और सरकारी प्रणालियों) की राय। प्लान–इट गर्ल्स के लिए एक बड़े पैमाने पर कार्यक्रम के कार्यान्वयन की क्षमता का मूल्यांकन, कार्यक्रम और उसके कार्यान्वयन को तैयार करने और सफलता की संभावना बढ़ने में मदद मिलेगी।

एक कार्यक्रम को बड़े पैमाने पर कार्यान्वयन के लिए, प्रभावशीलता, संभावित बदलाव और अपनाने की, कार्यनीति का संदर्भ और स्वीकार्यता जैसे विभिन्न मानकों पर विचार करना आवश्यक है।[20] कार्यक्रम के भविष्य के पैमाने के लिए मापनीयता मूल्यांकन करने के साथ–साथ कार्यक्रम के लिए संसाधन की आवश्यकता को समझना भी जरूरी होगा। एक लागत विश्लेषण अध्ययन निधियों को प्राथमिकता देने और आवंटित करने में निर्णय लेने वालों की मदद करता है।[21] स्केलेबिलिटी मूल्यांकन और लागत विश्लेषण करने के साथ–साथ मौजूदा फंडिंग हाल का अंदाजा लगाना भी इसे बड़े पैमाने पर कार्यान्वयन में सहयोग के लिए महत्वपूर्ण है।[22] सरकार द्वारा लागू किए जा रहे मौजूदा स्कूल–आधारित कार्यक्रमों में कार्यक्रम सीखने, सामग्री और कार्यनीतियों को सम्मिलित करने का काम प्राइवेट डोनर्स से वित्तीय सहायता के साथ किया जा सकता है। इस प्रकार, एक पब्लिक–प्राइवेट भागीदारी मॉडल विकसित करना जहां सरकार से संस्थागत सहयोग और निजी क्षेत्र से वित्त पोषण सहायता के माध्यम से ऊपर ले जाने के लिए किया जा सकता है।

प्लान–इट गर्ल्स को बड़े पैमाने पर कार्यान्वयन के लिए अनुशंसा

प्लान–इट गर्ल्स किशोरियों के लिए एक जेंडर–एकीकृत सशक्तिकरण और रोजगार योग्यता कार्यक्रम है, जो शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में प्रभावी पाया गया है, भले ही प्रभाव संदर्भ और उम्र के साथ भिन्न हो।[23,24] इस प्रकार, बड़े पैमाने पर कार्यान्वयन की योजना बनाते समय यह अनिवार्य है कि निम्नलिखित बातों का पालन किया जाए:

- **जेंडर–परिवर्तनकारी प्रोग्रामिंग:** प्लान–इट गर्ल्स एक बहु–स्तरीय और बहु–साझेदारी कार्यक्रम के रूप में जिसका उद्देश्य लड़कियों को सशक्त बनाना और उन्हें रोजगार कौशल से लैस करना है। यह तभी संभव है जब बदलाव की जिम्मेदारी सिर्फ लड़कियों पर ही न हो। एक जेंडर–परिवर्तनकारी कार्यक्रम में व्यक्तिगत या सामूहिक साधन, संबंधों और व्यवस्था प्रणाली के स्तर पर परिवर्तन शामिल हैं। प्लान–इट गर्ल्स ने पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण का पालन किया, जो कार्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण है।
- **जेंडर–एकीकृत पाठ्यचर्या:** पेस पाठ्यक्रम जेंडर, सत्ता, पितृसत्ता और उनके रोजमर्रा के जीवन पर इसके प्रभाव के बारे में उनकी समझ का निर्माण करके लड़कियों के लिए

18 रेस्टलेस डेवलपमेंट और ICRW. (2019)। प्लान–इट गर्ल्स– करियर एंड एम्प्लॉयबिलिटी कंपेनियन– रेफरेंस बुक फॉर टीचर्स एंड स्टूडेंट्स (दिल्ली)। नई दिल्ली: रेस्टलेस डेवलपमेंट और रेस्टलेस डेवलपमेंट और ICRW- (2019)। प्लान–इट गर्ल्स– करियर एंड एम्प्लॉयबिलिटी कंपेनियन– रेफरेंस बुक फॉर टीचर्स एंड स्टूडेंट्स (झारखंड)। नई दिल्ली: रेस्टलेस डेवलपमेंट।

19 प्रवाह और ICRW- (2019)। संवाद – जेंडर रिस्पॉन्सिव क्लासरूम का सह–निर्माण – शिक्षकों के लिए एक संसाधन पुस्तक। प्रवाह: नई दिल्ली।

20 कृपया मापनीयता आकलन ढांचे के लिए अनुबंध 1 देखें।

21 कृपया देखें प्लान–इट गर्ल्स: संसाधन आवश्यकताओं के लिए लागत विश्लेषण रिपोर्ट। http://www-icrw-org पर जाएं।

22 वर्तमान फंडिंग परिदृष्य को समझने के लिए कृपया प्लान–इट गर्ल्स: कॉरपोरेट स्कोपिंग रिपोर्ट देखें। http://www-icrw-org पर जाएं।

23 कुमार, पी., नुकेन, ए., दत्ता, एन., व्यास, ए., शाउब, ई., अच्युत, पी., वर्मा, आर. (2021)। प्लान–इट गर्ल्स से सीख: भविष्य की प्रोग्रामिंग के लिए साक्ष्य और पहलू। नई दिल्ली: इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वीमेन।

24 कृपया प्लान–इट गर्ल्स देखें: विस्तृत अंतर्दृष्टि के लिए गुणात्मक अध्ययन रिपोर्ट। http://www-icrw-org पर जाएं।

साधन बनाने पर केंद्रित है। यह लड़कियों को भेदभाव को एक सामूहिक अनुभव के रूप में देखने में मदद करता है जो सामाजिक संरचनाओं और मानदंडों से चलाया जाता है। पाठ्यक्रम उन्हें यह देखने में मदद करता है कि कैसे एक सामाजिक निर्माण के रूप में जेंडर उनकी इच्छाओं और भूमिकाओं को सीमित करता है और उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखता है। जेंडर–एकीकृत सामग्री लड़कियों के लिए सशक्तिकरण और रोजगार योग्यता पाठ्यक्रम का आधार है।

- **स्कूल के अलावा लड़कियों की सहायता करना:** जबकि पाठ्यक्रम लड़कियों के साथ जुड़ाव का आधार बनाता है, कार्यक्रम ने लड़कियों की शिक्षा जारी रखने, स्कूल में फिर से पंजीकरण करने, शादी में देरी और स्कूल में भाग लेने के लिए अपने परिवारों के साथ बातचीत करने और समुदाय आधारित गतिविधियों की आवश्यकता को स्वीकार और पूरा किया। साथ ही, समुदाय में तैयार किये गए YRCs ने उन्हें एक सुरक्षित जगह दी। इसके अलावा, कार्यक्रम स्कूल–आध ाारित जुड़ाव के पूरा होने के बाद भी उच्च शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण के लिए जानकारी और जुड़ाव प्रदान करता रहा।
- **कार्यक्रम को स्कूल सिस्टम में सम्मिलित करना:** प्लान–इट गर्ल्स एक स्कूल–आधारित कार्यक्रम है जो लड़कियों को नियमित इनपुट देता है। इसलिए, यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि कार्यक्रम स्कूल टाइम टेबल में सम्मिलित किया जा सके ताकि स्कूल सिस्टम के भीतर नियमितता और स्थिरता सुनिश्चित हो सके जो शैक्षणिक पाठ्यक्रम को प्राथमिकता देता है। स्कूल सिस्टम में कार्यक्रम के सम्मिलित करने से स्कूल के अंदर लड़कियों के लिए एक सुरक्षित जगह भी बनाया।
- **परिवार और समुदाय के भीतर सहयोगियों का निर्माण:** पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण न केवल कई साझेदारों को इनपुट देना है, बल्कि संरचनाओं के भीतर सहयोगियों का निर्माण करना भी है ताकि वे लड़कियों को उनकी इच्छाओं को पूरा करने में सहयोग दे सकें। माताओं के साथ गतिविधियाँ उनकी बेटियों के साथ बातचीत करने, उनकी इच्छाओं को समझने और उनकी आकांक्षाओं के लिए सहयोग जुटाने के लिए आयोजित की गईं। इसी तरह, झारखंड में माता–पिता और समुदाय के सदस्य किशोरों के नेतृत्व वाले अभियानों और गतिविधियों के माध्यम से एक नए मानदंड बनाने के लिए लगे हुए थे, जहां लड़कियों को सार्वजानिक स्थानों पर बेहिचक काम करते देखा गया था। इसने लड़कियों को नकारात्मक प्रतिक्रिया के डर के बिना सार्थक सामुदायिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए जगह बनाई और समुदाय के सदस्यों से सहयोग और प्रशंसा प्राप्त की।
- **संस्थागत साझेदारों के बीच जिम्मेदारी का निर्माण:** एक बहु–साझेदार स्कूल–आधारित कार्यक्रम में, साझेदारों के साथ सार्थक जुड़ाव कार्यक्रम की सफलता की कुंजी बन जाता है। शिक्षा प्रणाली के अंदर, जबकि राज्य और जिला स्तर के अधिकारियों से अनुमति आवश्यक है, कार्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए यह पर्याप्त शर्त नहीं है। प्रधानचार्यों और शिक्षक न केवल कार्यक्रम का सहयोग करने में बल्कि किशोरों के जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए, यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संस्थागत नजरिया कार्यक्रम के विरोध में नहीं हैय बल्कि एकजुट संदेश के लिए संस्थागत दृष्टिकोण को मिलाने का प्रयास करना चाहिए।

  इसी प्रकार पंचायत, ग्राम स्तरीय समितियां और स्वयं सहायता समूह जैसी सामुदायिक संस्थाएं भी लड़कियों के लिए एक सक्षम वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जबकि इन संस्थानों के साथ जुड़ने की कार्यनीति महत्वपूर्ण है, कार्यक्रम के लागू करने के दौरान इन संस्थानों की जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता को व्यवस्थित रूप से तैयार किया जाना चाहिए।
- **कार्यक्रम टीम में निवेश:** कार्यक्रम ने YFs के क्षमता निर्माण में भारी निवेश किया। इसमें नियमित प्रशिक्षण कार्यशालाएं, पुनरावृति प्रशिक्षण और कार्यक्रम की सामग्री पर नियमित चर्चा शामिल थी। कार्यक्रम टीम में इनपुट और निवेश को परिवर्तनकारी यात्रा के माध्यम से उनका सहयोग करने के लिए तैयार किया गया था, जिससे टीम का प्रत्येक सदस्य जेंडर परिवर्तनकारी कार्यक्रम में भाग ले।

अन्य क्षेत्रों और व्यवस्थाओं में कार्यक्रम को लागू करते समय, कार्यक्रम मॉडल की प्रासंगिकता पर विचार करना महत्वपूर्ण है। यह सांस्कृतिक और भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर प्रासंगिकता की जरूरत को सामने लाने में और उसको सम्बोधित करने में मदद कर सकता है।

अनुलग्नक

मापनीयता मूल्यांकन प्रभावशीलता, मुमकिन बदलाव और अपनाने, कार्यनीति संदर्भ के साथ मिलाने, और स्वीकार्यता के विभिन्न मानकों पर विचार करता है। मापनीयता की मूल्यांकन प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम के मूल्यांकन से उभरने वाले विचारों को ध्यान में रखती है और इसमें निम्नलिखित प्रश्न शामिल हैं:

मॉडल के प्रभाव को समझना

- क्या मॉडल विश्वसनीय है?
- मॉडल के परिणाम कितने देखने योग्य हैं?
- क्या मौजूदा प्रथाओं पर मॉडल का परस्पर लाभ है?

बड़े पैमाने पर योजना के लिए बदलाव और अनुकूलन की क्षमता का आकलन

- मॉडल को तब्दील करना और अपनाना या अनुकूलित करना कितना आसान है?
- मॉडल कितना परीक्षण योग्य है?
- बढ़ाए जाने पर जुड़ाव की संभावित पहुंच क्या है?
- क्या वह संदर्भ जिसके अंतर्गत मूल जुड़ाव लागू किया गया था, उस नए परिवेश के समान है जिसमें जुड़ाव को बढ़ाया जाएगा?

बड़े पैमाने पर कार्यान्वयन की संभावना

- क्या धन उपलब्ध होने की संभावना है?
- क्या प्रोजेक्ट के अंतर्गत भविष्य में कार्यान्वयन करने वाले संगठन में जिम्मेदारी निर्माण के लिए क्रियाविधि मौजूद है?
- कार्यक्रम के किन भागों को, यदि कोई हो, अनुकूलित या मिलाना होगा ताकि संसाधन की कमी की स्थिति में कार्यक्रम के सफल पैमाने को सुनिश्चित किया जा सके?

नोट:

नोट:

ICRW
INTERNATIONAL CENTER FOR RESEARCH ON WOMEN
PASSION. PROOF. POWER.

ICRW Asia
C-59, South Extension, Part II,
New Delhi – 110 049
Tel: 91.11.46643333
E-mail: info.india@icrw.org
www.icrw.org/asia
@ICRWAsia
@ICRWAsia

ICRW US
1120 20th St NW, Suite 500 North,
Washington, D.C. 20036
Tel: 202.797.0007
E-mail: info@icrw.org
www.icrw.org
@ICRWDC
@ICRW